सितम्बर 2012

दादावाणी

मूल्य: ₹ १०

ज्ञान के आधार पर

मोक्षानुगामी

अविनाशी सुख

रियल पुरुषार्थ

अज्ञान के आधार पर

संसारानुगामी

विनाशी सुख

रिलेटिव पुरुषार्थ

तंत्री : डिम्पल महेता
वर्ष : ७, अंक : ११
अखंड क्रमांक : ८३
सितम्बर २०१२

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Editor : Dimple Mehta

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

भ्रांत पुरुषार्थ - यथार्थ पुरुषार्थ

संपादकीय

आम तौर पर व्यक्ति के द्वारा जो-जो क्रियाएँ करने में आती हैं, जैसे कि नौकरी-कारोबार, पूजा-पाठ, सेवा, परोपकार वगैरह, उसे ही पुरुषार्थ माना जाता है। लौकिक दृष्टि से तो यह बात बराबर है, लेकिन अलौकिक दृष्टि से यह बात सत्य नहीं है। दो प्रकार के पुरुषार्थ कहे। एक जो आँखों से नहीं दिखता लेकिन अंदर सूक्ष्म में चल रहा है वह भ्रांत-पुरुषार्थ है। इस पुरुषार्थ का फल क्या है? संसार। और दूसरा पुरुषार्थ, वह जो संसार से मुक्त करवानेवाला है, वह खुद आत्मा होकर प्रकृति को निहारे उसे सच्चा पुरुषार्थ कहते हैं। जब तक व्यक्ति को आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई है, तब तक संयोग के दबाव के कारण 'मैं यह देह हूँ' इस कर्ताभाव से जाने-अन्जाने अनेक प्रकार के भाव हो जाते हैं। इन भावों को कर्म या कर्मबीज कहा जाता है। कर्म, योजना के रूप में बनते हैं उन्हें कॉज़ेज कहते हैं और रूपक में आते हैं उन्हें इफेक्ट कहते हैं।

सभी अवस्था में, व्यक्ति खुद के प्राप्त समझ के आधार पर उल्टे या सीधे भाव करता है। उन भावों के फल के रूप में जब कर्म उदय में आएँ तब पाप या पुण्य के अनुसार फल भुगतना पड़ता है। और जो क्रिया के रूप में भोगा जा रहा है, उसे भ्रांति की भाषा में पुरुषार्थ कहते हैं।

व्यक्ति सिर्फ सुल्टे ही भाव करे ऐसा हमेशा नहीं होता, उल्टे भाव भी उससे हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप अज्ञानता में खुद के ही उल्टे भविष्य की रचना करता है। भगवान कहते हैं कि यहीं पर मनुष्य को सावधान होने की ज़रूरत है।

ये उल्टा पुरुषार्थ किस प्रकार हो जाता है इसे समझाते हुए परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि, हम रात को सोने की तैयारी कर रहे हों और तभी मेहमान आएँ तो बाहर से तो अच्छा व्यवहार करते हैं, आगता-स्वागता करते हैं लेकिन अंदर भाव बिगाड़ते हैं कि ये इस समय कहाँ से आ गए? ये उल्टा भाव, उल्टा पुरुषार्थ। कोई एक व्यक्ति बड़ी रकम दान देता है, लेकिन उन्हें पूछें तो कहते हैं 'जाने दो न, व्यवहार के कारण देने पड़े हैं वर्ना मैं तो एक पैसा भी नहीं देता', यह उल्टा पुरुषार्थ हुआ। और उसी मौके पर कोई दूसरा व्यक्ति कहे 'आज मेरे पास पैसे नहीं हैं लेकिन अगर होते न तो मैं पाँच लाख रुपये दान में दे देता', तो यह सुल्टा पुरुषार्थ कहलाता है।

दादाश्री कहते हैं कि खुद के प्रारब्ध के लिए बाहर के संयोग या व्यक्ति ज़िम्मेदार नहीं है, किन्तु खुद की भावसत्ता ही ज़िम्मेदार है। संयोग का आ मिलना वह प्रारब्ध है और उल्टा संयोग आए उस घड़ी समता रखना उसे पुरुषार्थ कहते हैं। प्रारब्ध को बदल नहीं सकते, उसे तो भोगकर ही छुटकारा है लेकिन अंदर भाव ज़रूर बदल सकते हैं। कोई गाली दे, अपमान करे तब मन में ऐसा हो कि यह मेरे ही कर्म का फल है और सामनेवाला व्यक्ति निर्दोष है, निमित्त है। किसी भी प्रकार की दोष-दृष्टि के बिना समता रखें, वह भगवान का आज्ञारूपी पुरुषार्थ है।

पहले के किए हुए भाव, कर्मों के रूप में उदय में आएँ तब उल्टे भाव हो जाएँ ऐसा भी हो सकता है, वहाँ पर भगवान ने प्रतिक्रमण रूपी पुरुषार्थ भी बताया है। जिससे उल्टे भावों को धोकर आर्तध्यान-रौद्रध्यान को धर्मध्यान में बदल सकते हैं। किन्तु अंत में संसार तो खड़ा ही रहनेवाला है न? जिन्हें वास्तव में संसार से छूटना है और मोक्ष में ही जाना है, उन्हें तो सही अर्थ में रिलेटिव पुरुषार्थ में से रियल पुरुषार्थ में आना पड़ेगा। आत्मज्ञानी द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करके फिर खुद पुरुष पद में आए तब खुद कर्ता पद में से अकर्ता पद में आता है और इसके बाद ही स्व का पुरुषार्थ शुरू होता है। हर कोई यथार्थ पुरुषार्थ को प्रारंभ करके मुक्ति के पथ पर प्रयाण करे यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

भ्रांत पुरुषार्थ - यथार्थ पुरुषार्थ

पुरुषार्थ की व्याख्या

प्रश्नकर्ता : हर एक की दृष्टि से पुरुषार्थ की व्याख्या अगल-अलग हो सकती है। तो उनमें से श्रेष्ठ पुरुषार्थ की व्याख्या कौन-सी है?

दादाश्री : पुरुषार्थ दो प्रकार के हैं। एक तो खुद पुरुष होकर प्रकृति से अलग हो जाए और प्रकृति को निहारे, उसे पुरुषार्थ कहते हैं। प्रकृति को निहारता रहे, प्रकृति क्या कर रही है उसे देखता ही रहे, उसे पुरुषार्थ कहते हैं। और दूसरा (भ्रांति का) पुरुषार्थ, इस जगत् की दृष्टि से भ्रांत पुरुषार्थ भी सच्चा माना जाता है। क्योंकि पुरुषार्थ तो है ही न! उसने उल्टा किया तो उल्टा फल मिला, सीधा किया तो सीधा फल मिला।

उल्टा पुरुषार्थ अज्ञातना से

प्रश्नकर्ता : दादाजी, भ्रांति का पुरुषार्थ मतलब क्या?

दादाश्री : आम तौर पर भ्रांति का पुरुषार्थ किसे कहते हैं वह मैं आपको बताता हूँ। उदाहरण के तौर पर रात को आपके गाँव से दो-तीन व्यक्ति आए और उनके साथ दूसरे दस-पंद्रह-बीस लोग भी आ जाए और रात में कहेंगे, 'चंदूभाई दरवाज़ा खोलिए।' तो आप खोलोगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : खोलना ही पड़ेगा न!

दादाश्री : पड़ेगा मतलब? वहाँ पर आपका पुरुषार्थ है! दरवाज़ा खोलते हैं, फिर 'आइए, पधारिए' ऐसा भी बोलना पड़ता है। बाहर तो 'आइए, पधारिए' बोलते हैं, अंदर कहेंगे, 'अभी ये लोग कहाँ से आ गए, अब मैं क्या करूँ?' वह पुरुषार्थ, वह जो अंदर चल रहा है वह पुरुषार्थ है और अभी जो भुगत रहे हो वह प्रारब्ध है। खुली आँखों से दिखता है वह सारा प्रारब्ध है। और जो आँखों से नहीं दिखता और अंदर चल रहा है वह पुरुषार्थ है। यानी, भीतर ऐसा पुरुषार्थ चल रहा है और अगले जन्म के लिए आप (आज) पुरुषार्थ बिगाड़ रहे हो। इसलिए मैं ऐसा सीखलाता हूँ कि मुआ, अगले जन्म के लिए पुरुषार्थ मत बिगाड़ना। अब ये लोग तो आ ही गए हैं! और फिर हम खानदानी लोग हैं इसलिए कहते हैं, 'थोड़ी चाय लेंगे?' तब वे कहेंगे, 'नहीं, खिचड़ी-कढ़ी बना दीजिए, बहुत हो गया।' तब फिर पत्नी अंदर जाकर झगड़ा करती है। इसलिए समझाता हूँ कि ये उल्टा हो रहा है, उल्टा पुरुषार्थ हो रहा है, इसलिए सीधा करना। कि अब तो आ ही गए हैं, फिर ऐसा करने का क्या मतलब है? वैसे भी बाहर का व्यवहार तो हम अच्छा ही करते हैं न! लेकिन कलियुग के दबाव के कारण ऐसा हो जाएगा कि भीतर ऐसे भाव हो जाएँ कि 'अभी कहाँ से आ गए?' ये दबाव कलियुग का है न! लेकिन हमें उसे पश्चाताप करके धो लेना चाहिए। कि 'हे भगवान ऐसे भाव नहीं होने चाहिए, मेरी अज्ञानता के कारण ऐसा हो रहा है।' अगले जन्म का पुरुषार्थ नहीं बिगाड़ना चाहिए।

पुरुषार्थ उल्टा हो जाए तो उल्टा फल ही

भुगतना पड़ेगा न! इसलिए हमें कहना है कि, 'भगवान, मैंने जो किया ऐसा मुझे नहीं करना चाहिए, भले ही आ गए, जो आए हैं वह हिसाब है न!' बिना हिसाब के कोई नहीं आता। पुरुषार्थ आपकी समझ में आया?

समझ प्रारब्ध और पुरुषार्थ की

प्रश्नकर्ता : दादाजी, प्रारब्ध और पुरुषार्थ समझाइए।

दादाश्री : पुरुषार्थ अंदर हो रहा है, जिसे भाव पुरुषार्थ कहते हैं। लोग 'भाव' शब्द बोलते तो हैं लेकिन समझते नहीं हैं। द्रव्य सारा प्रारब्ध है और भाव वह पुरुषार्थ है।

आप यहाँ आए वह प्रारब्ध है। और अब अंदर जो भावना होती है कि, 'ओहोहो! ऐसे दर्शन फिर कब मिलेंगे', इस प्रकार जो भी भावनाएँ होती हैं, वह पुरुषार्थ। वर्ना ऐसी भी भावना होती है कि 'यहाँ मेरा टाइम (समय) बिगड़ा, यहाँ मैं क्यों आया?' यह उल्टा पुरुषार्थ किया। उल्टी-सीधी भावनाएँ करता रहता है।

प्रश्नकर्ता : हं।

दादाश्री : अंदर जो भाव होते हैं वह सारा पुरुषार्थ है।

प्रश्नकर्ता : तब फिर दादाजी, अच्छा पुरुषार्थ भी होता है न?

दादाश्री : इस बहन के साथ तुम्हें कोई मतभेद हो जाए या कुछ और हो जाए, वह सब प्रारब्ध है। लेकिन बाद में तुम भीतर ऐसा भाव करो कि, 'ऐसा नहीं होना चाहिए, यह गलत है', वह पुरुषार्थ।

फ़ादर (पिता) या भाई के लिए हमें उल्टे भाव हो जाए तो उन्हें सीधा कर लेना है। उल्टे भाव संयोग के आधार पर हो जाते हैं। बाहर के संयोग को हम न्यायपूर्वक देखें तो हमें लगता है कि 'यह गलत हो गया, ऐसे भाव नहीं होने चाहिए।' तो फिर भीतर ही उन भावों को सीधा कर लेने में हमें क्या आपत्ति है?

फिर तुम्हारा मन क्या कहेगा? 'वह तो ऐसा ही करता है न!' तब हमें कहना है, 'वह चाहे जो करे, मुझे मेरा फ़र्ज़ अदा करना है।' वो जो करते हैं उसकी ज़िम्मेदारी उनकी है। हमें अपना क्लियर (साफ) रखना चाहिए न! सामनेवाला क्लियर नहीं रखता हो तो कभी उनको समझाना चाहिए कि, 'भाई, मैं तो क्लियर रखता हूँ, आप भी रखना वर्ना फँस जाओगे।' इस संसार में फँसने के बाद कभी कोई बाहर नहीं निकला। यह बात ज्ञानी के पास समझ लेनी चाहिए।

पूरा जगत् प्रारब्ध और पुरुषार्थ की डिमार्केशन लाइन (सीमांकन रेखा) नहीं समझता। हिन्दुस्तान में कोई एक ऐसा व्यक्ति ढूँढ लाओ जो प्रारब्ध और पुरुषार्थ का भेद कर दे। उसकी लाइन ऑफ डिमार्केशन डालकर दे। प्रारब्ध क्या और पुरुषार्थ क्या है उसकी लाइन ऑफ डिमार्केशन डालनेवाला हिन्दुस्तान में तो क्या, वर्ल्ड में कोई नहीं है। सब यों ही बातें बनाते हैं, गप्प हाँकते रहते हैं। सच्चा होना चाहिए, तुरंत फल देनेवाला होना चाहिए। जैसे कि, मुँह में शक्कर डालें और मीठी नहीं लगे, तो शक्कर नहीं थी ऐसा कह देना चाहिए।

पुरुषार्थ किसे कहा जाता है

प्रश्नकर्ता : आज ज्ञानी के पास प्रारब्ध और पुरुषार्थ की डिमार्केशन लाइन अच्छी तरह समझ लेनी है। दादाजी, पुरुषार्थ किसे कहते हैं?

दादाश्री : आपने अच्छा प्रश्न पूछा है, प्रश्न पूछें और साइन्टिफिकली समझें, तो उसका हल आता है, वर्ना हल नहीं आता। आप क्या पुरुषार्थ करते हो?

प्रश्नकर्ता : कारोबार का।

दादाश्री : वो तो पुरुषार्थ नहीं कहा जाता। यदि खुद ही (कारोबार का) पुरुषार्थ करता हो तो फिर फ़ायदा ही होगा, लेकिन कभी नुक़सान भी होता है न? उसे पुरुषार्थ नहीं कहते। लपेटी हुई डोरी खुलती है, उसे पुरुषार्थ कैसे कह सकते हैं? पुरुषार्थ दो प्रकार के हैं:- भ्रांतिवाले को भ्रांत पुरुषार्थ और 'ज्ञानी' को ज्ञान पुरुषार्थ। आप अगर पुरुषार्थ करते हो तो नुक़सान क्यों उठाते हो?

प्रश्नकर्ता : ऐसा भी हो जाता है। कभी-कभी नुक़सान भी होता है।

दादाश्री : नहीं, पुरुषार्थ करनेवाले को तो कभी नुक़सान नहीं होता। पुरुषार्थ किया ऐसा कौन बोलता है? पूरा 'वर्ल्ड' 'टोप्स' '(लट्टू)' है। यह तो प्रकृति नचाती है वैसे नाचता है और कहता है 'मैं नाचा!' अगर थोड़ा ही शॉक (करंट) दें तो हड्डियाँ और सबकुछ बाहर निकल आता है! पुस्तक पढ़ना, शास्त्रों को पढ़ना, वह भी पुरुषार्थ नहीं है। सच्चे पुरुषार्थ को कोई समझा ही नहीं है। 'मैं हूँ, मैं हूँ' करता है। अरे! तू तो लट्टू है! श्वास भी नाक से लिया जाता है। श्वास लेने की भी खुद की शक्ति नहीं है और एक उच्छवास निकालने की भी इस लट्टू में शक्ति नहीं है। कहता है कि, 'मैं श्वास लेता हूँ', तो फिर रात को जब तुम सो जाते हो तब कौन श्वास लेता है?

तुम्हें यह ज्ञान है न कि नाक बंद कर दें तो क्या होगा? इस 'मशीनरी' का इस तरह से प्रबंध किया गया है कि वो भीतर से श्वास लेती है। और फिर वही 'मशीनरी' श्वास फेंकती है। और लोग कहते हैं कि, 'मैं लंबा श्वास लेता हूँ और मैं छोटा श्वास लेता हूँ।' तुम्हें तो 'तुम कौन हो' इसी बात का भान नहीं है। डोरी लपेटते हैं और लट्टू घूमता है, उसमें 'मैं घूमा' कहता है। वर्ल्ड में संडास जाने की सत्ता किसीको भी नहीं है, हमें भी नहीं है। यों ही 'पुरुषार्थ, पुरुषार्थ' अलापते रहते हो!

पुरुषार्थ कौन करता है?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, तो फिर पुरुषार्थ कौन करता है?

दादाश्री : खुद पुरुषार्थ कर सकते तब तो कोई मरता ही नहीं, लेकिन ये लट्टू तो कभी भी मर जाता है। लट्टू 'डॉक्टर' से कहता है 'साहब, मुझे बचाइए।' अरे, डॉक्टर का बाप मर गया, माँ मर गई, उन्हें वह नहीं बचा पाया तो आपको क्या बचाएगा? डॉक्टर के बाप के गले में कफ जम गया हो और हम डॉक्टर से कहें कि, 'आप इतने सारे ओपरेशन करके पेट में से गाँठ निकाल लेते हो, तो ये ज़रा कफ भी निकाल दो न।' तब वह कहेगा, 'नहीं, ऐसा करने से तो वह खत्म हो जाएँगे।' यानी ये बिना जाने बोलते हैं कि 'मैंने बचाया'। अरे, अरथी नहीं निकलनेवाली हो, तो ऐसा बोलो। तुम पहले अपनी अरथी निकलने से रोको! अरे कभी भी मर जाओगे! इसलिए बात को समझो।

खाने में खुद का पुरुषार्थ कितना

प्रश्नकर्ता : खाने में तो पुरुषार्थ होता है न?

दादाश्री : अभी यहाँ नास्ता लाए हैं, उसे खाने में क्या पुरुषार्थ करना पड़ेगा? यदि खाने की क्रिया में पुरुषार्थ करना पड़ता है तब फिर तो वो और जगत् का पुरुषार्थ, दोनों समान ही हैं। खाने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : खाने के लिए हाथ, मुँह हिलाने पड़ते हैं। 'हम' दख़ल नहीं करें तो दांत अच्छी तरह से चबाते हैं, जीभ भी ठीक से रहती है। यह तो खुद सिर्फ दख़ल करता है कि, 'खाने का पुरुषार्थ मैं करता हूँ।' जीभ अगर खाने का पुरुषार्थ करने लगे न तो बत्तीस दांतों के बीच कईबार चबा दी जाएगी! किन्तु जीभ कभी भी दख़ल नहीं करती और ऐसा

नहीं कहती कि 'मैं पुरुषार्थ करती हूँ।' खाना खाते समय यदि मिल में पुरुषार्थ करने नहीं जाएँ (खुद कारखाने के विचारों में खो नहीं गया हो) तो खाने की क्रिया बहुत अच्छी तरह स्वाभाविक हो सके ऐसा है। सिर्फ 'देखना' और 'जानना' है। सबकुछ स्वाभाविक तौर पर चलता रहे ऐसा है! रात में आप खाना खाकर सो जाते हो? फिर उसे पचाने (हज़म करने) के लिए क्या पुरुषार्थ करते हो?

खुद की सत्ता कितनी?

प्रश्नकर्ता : खुराक के पाचन के लिए घूमना-फिरना पड़ता है न?

दादाश्री : वह क्रिया पाचन के लिए निमित्त है। सो जाते हो तब श्वासोच्छश्वास अच्छे से चलते हैं, इसलिए तो व्यक्ति 'फ्रेश' हो जाता है। आप नींद में होते हो फिर भी अंदर पाचन के लिए ज़रूरत के मुताबिक पाचक रस, बाइल वगैरह बनते ही रहते हैं। उसे चलाने कौन जाता है? जैसे अंदर का अपने आप चलता है वैसे बाहर का भी सबकुछ अपने आप ही चलता है। प्रयत्न वगैरह करने पड़ते हैं। बाकी सब व्यवस्थित के अनुसार ही प्रबंधित हुआ होता है। जन्म हुआ तब से ही *भोगवटा* (सुख-दुःख का असर), मान-अपमान, यश-अपयश सबकुछ लेकर ही आया है, किन्तु यह अहंकार बाधक है। जो भी कोई क्रिया होती है उसमें खुद को कर्ता मानता है। इसमें करने जैसा क्या है? भीतर खाना डालते हैं और भीतर कुदरती तौर पर ही सारी क्रियाएँ होती हैं। इसी तरह बाहर भी सब कुदरती तौर पर ही चलता है। कितनी खुराक, कितने कदम, किस तरह चलना, कितना चलना, सबकुछ अपने आप ही होता रहता है। खुद सिर्फ अहंकार करता है, होशियारी करता है, और मानता है कि खुद पुरुषार्थ करता है।

लोग कमर कसकर पुरुषार्थ करने निकलते हैं कि बंबई में ऐसा करना है और वैसा करना है! बंबई तो वही का वही है, और कितने ही सेठ मर गए! जब तक बंबई की आबादी है तब तक करनेवाला कोई नहीं है, क्योंकि आबादी को रोकने की सत्ता नहीं है और बरबादी को भी रोकने की सत्ता नहीं है! और लोग पुरुषार्थ करने निकले हैं! उन सभी बर्तनों के बीच तुम तो सिर्फ एक चम्मच जैसे हो।

(इसलिए यह) पुरुषार्थ वह भ्रांत भाषा का शब्द है, यह सच्ची भाषा का शब्द नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पुरुषार्थ की ज़रूरत तो है ही न?

दादाश्री : वास्तव में यह सबकुछ प्रारब्ध ही है। वास्तविक पुरुषार्थ लोगों की समझ में नहीं आया इसलिए भ्रांत पुरुषार्थ ढूँढ निकाला। भ्रांत पुरुषार्थ यानी इल्युझन (मृग-मरीचिका) जैसा! पुरुषार्थ समझ में आए ऐसी वस्तु नहीं है। पुरुषार्थ यदि समझ में आ जाए न तो कल ही सब लोग पुरुषार्थ करके मोक्ष में चले जाएँ! लेकिन ये तो प्रारब्ध को ही बदलते रहते हैं, इसलिए उनकी मेहनत बेकार जाती है।

जो अनिवार्य है, वह सारा प्रारब्ध

प्रश्नकर्ता : जो कर्म करते हैं वे भाग्य से होते हैं या कर्म से भाग्य बनता है?

दादाश्री : कर्म भाग्य से होते हैं, लेकिन कर्म होते हैं उन पर भाव आता है इसका पता नहीं चलता, वहाँ उस घड़ी पुरुषार्थ अंदर सूक्ष्म तौर पर चालू ही रहता है। वे 'कॉज़ेज' हैं, और ये सब 'इफेक्टस' हैं। सारे 'इफेक्टस' प्रारब्ध हैं। आप यहाँ पर आए वह प्रारब्ध, आपने जो पूछा वह प्रारब्ध, सुनते हो वह प्रारब्ध और पुरुषार्थ तो अंदर हो रहा है। मतलब जन्म से मृत्यु तक सबकुछ अनिवार्य है। जो अनिवार्य है वह सारा ही प्रारब्ध है। इसलिए, शादी किए बिना चारा नहीं है, विधवा या विधुर हुए बिना चारा नहीं है, पढ़ाई किए बिना चारा नहीं है, नौकरी-कारोबार के बिना चारा नहीं है। कोई न्याय से व्यापार करता है तो भी उसका व्यापार ठीक से नहीं चलता और कोई अन्याय से करता है तो अच्छा चलता है, यह

सब प्रारब्ध ही है। स्थूल भाग सारा प्रारब्ध ही है और सूक्ष्म भाग जो है वह पुरुषार्थ है।

प्रकृति सुलझे संयोगाधीन

यह सारा प्रारब्ध ही है। प्रकृति ज़बरदस्ती नचाती है, प्रकृति उतावले को तेज़ी से नचाती है, आलसी को धीरे-धीरे नचाती है। उतावला व्यक्ति क्या कहता है, कि 'यह प्रारब्धवादी आलसी है और मैं पुरुषार्थवादी हूँ।' वास्तव में तुम्हारा उतावला प्रारब्ध है और इसका आलसी प्रारब्ध बंधा हुआ है। दोनों संयोगाधीन हैं। दुकान अच्छी चले तो पुरुषार्थी माना जाता है और नहीं चले तो कहते हैं कि प्रारब्धवादी है! हक़ीक़त में ऐसा नहीं है। प्रारब्ध यानी 'फ्री ऑफ कॉस्ट' (मुफ्त) वस्तु है। पुरुषार्थ यानी आगे ले जानेवाली वस्तु है, वह कमाई करवानेवाली वस्तु है। अरे, उसने तो संयम गँवाया, लेकिन आपने भी संयम गँवाया! इसलिए दोनों अधोगति में जाओगे। यदि आप संयम रखो तो आपकी अधोगति नहीं होगी, उस जगह पर फिसलना नहीं है। सामनेवाला तो फिसला, लेकिन आप भी फिसलोगे तो वहाँ पुरुषार्थ कहाँ रहा?

यह प्रारब्ध-पुरुषार्थ ठीक से समझने जैसी वस्तु है। जो कल था और वही आज भी है, उसे पुरुषार्थ कैसे कह सकते हैं? फिर भी, पुरुषार्थ है ही नहीं ऐसा नहीं कह सकते। ज़्यादा से ज़्यादा हज़ार में से दो-पाँच व्यक्तिओं को पुरुषार्थ होता है। बहुत कम प्रतिशत में होते हैं, और वे भी जानते नहीं हैं कि यह पुरुषार्थ है। वे तो ऐसा ही समझते हैं कि जो जल्दी-जल्दी सब कर रहा हो उसे पुरुषार्थ कहते हैं। अपने लोग तो जल्दबाज़ी करना, धमाल करना, दौड़-धूप करना, दिन-भर फ़ालतू नहीं बैठना उसे पुरुषार्थ कहते हैं। 'बहुत पुरुषार्थी व्यक्ति है, बहुत पुरुषार्थी व्यक्ति है', ऐसा कहते हैं। अरे! यह लट्टू तो पूरा दिन घूमने के लिए ही पैदा हुआ है। उसे पुरुषार्थ कैसे कह सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : कोई कहता है कि हम श्रम करें तो ही प्रारब्ध मिलता है। कोई कहता है कि प्रारब्ध हो तो ही श्रम करने का मौका मिलता है। इसमें सही क्या है?

दादाश्री : इन आँखों से जो कुछ दिखाई देता है, कानों से जो कुछ सुनाई देता है, नाक से जो भी सूंघा जाता है, जीभ से जो भी चखते हैं, चमड़ी को जो भी कुछ स्पर्श होता है, इन पाँच इन्द्रियों के ज्ञान से जो भी अनुभव में आता है वह सब प्रारब्ध है। बोलो, अब ऐसी बातें लोग कैसे समझेंगे?

नहीं बदलता प्रारब्ध

जीवमात्र प्रवाह के रूप में है। जैसे नर्मदाजी (नदी) का पानी बहता रहता है, उसमें हम कुछ नहीं करते। प्रवाह ही हमें आगे ले आता है। जैसे कि, पिछले जन्म में नौवे मील पर हों, वहाँ अच्छे-अच्छे आम के पेड़, आम, बादाम, अंगूर सबकुछ देखा हो। सुंदर बगीचे देखे हों। और आज इस जन्म में दसवे मील पर आया, तब सब रेगिस्तान जैसा मिला। इसलिए फिर नौवे मीलवाला ज्ञान उसे अकुलाता रहता है। अब यहाँ आम, अंगूर वगैरह माँगता है, लेकिन उसे ये सब नहीं मिलता। इस तरह प्रवाह आगे-आगे बढ़ता ही रहता है!

बिना समझे नहीं बोलना है 'प्रारब्ध'

लोग अब तक प्रारब्ध और पुरुषार्थ का राग अलापते रहते थे न, कि प्रारब्ध में जो लिखा होगा वह होगा, ऐसा नहीं बोलना चाहिए। प्रारब्ध कब बोलना चाहिए कि जब पुरुषार्थ करने पर भी उल्टा फल आए, कि इतनी मेहनत की फिर भी ऐसा फल क्यों आया, तब कहें कि प्रारब्ध के खेल हैं। कुछ उल्टा हो गया, तब। पुरुषार्थ का फल सीधा (अच्छा) आना ही चाहिए और अगर नहीं आए तो समझना कि प्रारब्ध है। पहले के किसी कर्मों का फल है यह। मतलब, प्रारब्ध को बिना समझे ही हाँकते रहते हैं।

आयोजन पूर्वजन्म में, रूपक इस जन्म में

प्रश्नकर्ता : दादाजी, प्रारब्ध तो ठीक है लेकिन क़िस्मत यानी क्या?

दादाश्री : क़िस्मत यानी प्रारब्ध, पूर्वजन्म का लाया हुआ माल अभी खर्च हो रहा है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर पिछले जन्म में कोई पाप किए हों तो उनका फल इस जन्म में मिलता है या पिछले जन्म में ही मिल गया होगा?

दादाश्री : नहीं, पिछले जन्म के पापों का फल इस जन्म में ही मिलता है, पिछले जन्म में जो पाप हुए थे न, वे आयोजन के तौर पर हुए थे। उदाहरण के तौर पर, अगर नर्मदा नदी का पुल बाँधना हो तो पहले क्या करते हैं? नक्शे तैयार करते हैं न। मतलब उसी तरह पूर्वजन्म में आयोजन के रूप में हुए थे, वे फिर अब रूपक के रूप में आते हैं। नर्मदा के पुल का आयोजन वहाँ होता है, फिर नक्शे बनते हैं, उस घड़ी नक्शे में पूल टूट जाए तो क्या सारा पानी बहने लगेगा? नहीं बहेगा। यानी नक्शे में बदलाव कर सकते हैं, बाद में बदलाव नहीं हो सकेगा। मतलब पिछले जन्म में जो आयोजन किया था, तब उसमें परिवर्तन कर सकते थे, लेकिन अब उसमें परिवर्तन कैसे हो सकता है? यानी अभी अगर हम परिवर्तन करें तो अगले जन्म में परिवर्तन होगा। वर्ना यदि अगले जन्म का सिक्का लग गया, उसे विधाता के लेख कहते हैं, फिर वो नहीं बदलता।

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म में ही आयोजन हुआ है तो इस जन्म का आयोजन मैं कब करूँगा?

दादाश्री : हर एक जन्म में (अगले जन्म का) भीतर आयोजन होता ही रहता है, बिना आयोजन के आगे बढ़ता ही नहीं।

संयोग मात्र प्रारब्ध

प्रश्नकर्ता : प्रारब्ध की बात तो समझ में आ गई लेकिन पुरुषार्थ की बात अभी भी ठीक से समझ में नहीं आई।

दादाश्री : संयोग आ मिला वह प्रारब्ध और उल्टा संयोग आए उस घड़ी समता रखना उसे पुरुषार्थ कहते हैं। जो-जो संयोग हमें मिलते हैं वह सारा प्रारब्ध है। आप 'फर्स्ट क्लास' पास (उत्तीर्ण) हुऐ वह भी प्रारब्ध और कोई 'फर्स्ट क्लास' अनुत्तीर्ण हुआ वह भी प्रारब्ध। इन शब्दों पर से नोट करना कि जितने संयोग हमें आ मिलते हैं वह सारा प्रारब्ध ही है। सुबह जाग गए उसे संयोग कहते हैं। साढ़े सात बजे जागें तो साढ़े सात का संयोग कहलाता है। इसे प्रारब्ध कहते हैं।

जब तक किसी का आलंबन लेना पड़ता है तब तक प्रारब्ध है। जितनी भी चीज़ों का संयोग हुआ (मिला) वह प्रारब्ध और उस समय जो भावाभाव उत्पन्न होते हैं वह पुरुषार्थ।

सच्चा पुरुषार्थ कौन-सा?

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति मेरे बारे में बुरा बोलता है, मेरे सामने ही बोलता है और मैं उसके प्रति समभाव रखकर पुरुषार्थ करूँ, तो ये वास्तव में प्रारब्ध कहलाता है या नहीं?

दादाश्री : नहीं। हमें कोई गलत संयोग आ मिला, कोई गालियाँ दे तब लोग पुरुषार्थ नहीं करते और पलटकर गालियाँ देते हैं, उससे बात नहीं करते, ऐसा करते हैं। कोई जब आपको गालियाँ दे उस समय आपके मन में ऐसा हो कि 'यह मेरे ही कर्म का फल है, सामनेवाला तो निमित्त है, निर्दोष है', ये भगवान का आज्ञारूपी पुरुषार्थ है। उस घड़ी आप समता रखो वह पुरुषार्थ है।

स्वाभाविक जो कुछ भी होता है, वह प्रारब्ध

जगत् में कुछ लोग पुरुषार्थ करते हैं, बिल्कुल कोई नहीं करते हो ऐसा भी नहीं है। लेकिन वे खुद

यह पूरी तरह से समझ नहीं पाते कि इसे प्रारब्ध कहना है या पुरुषार्थ कहना है! स्वाभाविक तौर पर ही उनसे पुरुषार्थ हो जाता है। लेकिन वह खुद जानता नहीं है कि ये कौन-से ग्रेड की वस्तु है और वो कौन-से ग्रेड की वस्तु है। प्रारब्ध और पुरुषार्थ के बारे में तो लोग सिर्फ इतना ही जानते हैं कि बस, मुझे ग्यारह बजे जाना है, देर क्यों हो गई? कढ़ी क्यों गिरा दी? ऐसा किया और वैसा किया। अरे, कढ़ी गिर गई तो उसे संयोग कहते हैं। इतनी ही बात से दो अलग हिस्से पड़ते हैं कि संसार में संयोग और वियोग दो ही हैं। जितने संयोग हैं उतने वियोग होने ही वाले हैं। और जो संयोग आया उसमें समता रखना वह पुरुषार्थ। कोई फूल-हार पहनाए तो छाती फूल जाती है उसे पुरुषार्थ नहीं कहते। स्वाभाविक जो कुछ भी होता है वह पुरुषार्थ है। फूल-हार पहनाए तो हम पद्धति के अनुसार रहें, ऐसा पुरुषार्थ पहले कभी हुआ था?

प्रश्नकर्ता : नहीं, मुझे पता ही नहीं था कि यह पुरुषार्थ है।

दादाश्री : इसलिए हम कहते हैं कि प्रारब्ध और पुरुषार्थ को समझो। और जो पुरुषार्थ हो रहा है उसे खुद नहीं जानता वह स्वाभाविक होता है।

उल्टा पुरुषार्थ होता है भाव से ही

मान लो आपने गुस्से में आकर किसीको दो धौल लगा दी। फिर आपको मन में बुरा लगता है कि यह गलत हो गया। फिर भी जब कोई आकर आपसे पूछे कि, 'अरे चंदूभाई, क्या ऐसे कोई किसीको मारता है? यों रास्ते पर ऐसा कोई करता है?' तब आप क्या कहोगे? 'उन्हें तो मारना ही चाहिए, आपको क्या पता?' भीतर तो समझते हो कि गलत हो गया, फिर भी उस व्यक्ति के आगे ऐसा क्यों बोलते हो?

प्रश्नकर्ता : खुद का मान बचाने।

दादाश्री : हाँ। ऐसा करके गुनाह करता है। आपने सबकुछ एक्सेप्ट (स्वीकार) किया कि यह गलत हो रहा है तो फिर उनके पास भी बोलो न कि, 'हाँ भाई, मुझसे गलती हो गई, गलत हो गया।' लेकिन वहाँ पर बचाव करते हैं। तो फिर क्या होगा? ऐसा है पुरुषार्थ! ऐसे पुरुषार्थ के कारण जगत् लटका हुआ है। ऐसा पुरुषार्थ करते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : ऐसा ही करते हैं, उल्टा।

दादाश्री : यह उल्टा पुरुषार्थ।

इस पूरे संसार काल में जो जागृति है वह पुरुषार्थ है। जागृति के अलावा दूसरा पुरुषार्थ है ही नहीं। प्रारब्ध के साथ हमेशा पुरुषार्थ होता है, लेकिन पुरुषार्थ भीतर होता है, भाव से। भाव बदलते हैं, वह पुरुषार्थ। क्रिया में पुरुषार्थ नहीं होता। कोई भी व्यक्ति (स्वतंत्र रूप से) क्रिया नहीं कर सकता। क्रिया तो जब हाथ ठीक हों, पैर ठीक हों, दिमाग ठीक हो तब इन सबके आधार पर क्रिया होती है।

बिगड़ते हैं भाव इस तरह

प्रश्नकर्ता : भाव किस तरह बिगड़ते हैं?

दादाश्री : यह 'वीतरागों' का साइन्स कैसा है? मान लो एक व्यक्ति ने आज पचास हज़ार रुपये दान में दिए, फिर वही व्यक्ति यहाँ आकर हमसे कहे कि, 'मैंने तो सेठ के दबाव में आकर दिए हैं, वर्ना मैं कभी पैसे नहीं देता। मैं कोई इतना भोला नहीं हूँ।' बोलो अब, 'वीतराग' के बहीखाते में क्या जमा होगा?

प्रश्नकर्ता : कुछ भी नहीं।

दादाश्री : तो फिर उसके दिए गए पैसे बेकार गए? अभी जो दिए हैं वे बेकार नहीं जाएँगे। वह स्थूल में उसने नगद पैसे दिए उसका फल स्थूल में तो उसे नगद यहीं का यहीं मिल जाएगा। यहाँ उसे कीर्ति मिलेगी। जितना मिकेनिकल भाग है न, उस

मिकेनिकल भाग को कीर्ति और अपकीर्ति दोनों मिलती है और फिर पूरा हो जाता है। किन्तु उसने सूक्ष्म में जो भाव किया था कि, 'मैं दूँ ऐसा नहीं हूँ', उसका फल अगले जन्म में मिलेगा। और वहाँ पर तो उसने (पिछले जन्म में) भावी के लिए जो भाव किया था वह देखा जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह दान तो देता ही है न?

दादाश्री : वह जो दान देता है उसके लिए उसने पूर्वजन्म में भाव किया था इसलिए आज देता है। लेकिन आज उल्टी भावना कर रहा है उसका फल अगले जन्म में मिलेगा। अभी बीज पड़ रहा है कि 'मैं किसीको दूँ ऐसा नहीं हूँ', इसलिए, दान दिया फिर भी बीज उल्टा पड़ा! उसका फल अगले जन्म में मिलेगा। फिर अगले जन्म में सेठ एक रुपया भी दान में नहीं दे पाएँगे और यदि ऐसा कहे कि 'पचास हज़ार रुपये दिए यह बहुत अच्छा हुआ। यह सेठ नहीं होते तो मैं दे नहीं पाता। सेठ थे इसलिए मैं दे पाया, बहुत अच्छा हुआ' तो अच्छा बीज पड़ा।

बंधन सूक्ष्मकर्म से

प्रश्नकर्ता : इसे ही आप कर्म किया कहते हो न?

दादाश्री : वह सूक्ष्मकर्म है। अगर आप समझ लो न, तो स्थूलकर्म का बिल्कुल भी बंधन नहीं है। तभी तो यह 'साइन्स' मैंने नये तरीक़े से दिया है। अब तक तो, स्थूलकर्म से बंधन है ऐसा लोगों के दिमाग में घुसा दिया है, और इसलिए लोग डरते हैं।

पूरा जगत् स्थूलकर्म को ही समझा है। सूक्ष्मकर्म को समझा ही नहीं है। सूक्ष्म को समझे होते तो ऐसी दशा नहीं होती!

मतलब हम यह कहना चाहते हैं कि स्थूल फल पूरा यहीं पर समाप्त हो जाए ऐसा है। वो वहाँ (अगले जन्म में) साथ में आए ऐसा नहीं है। किन्तु भीतर सूक्ष्म में आपको तब भाव हो जाता है। जैसे उस व्यक्ति को हुआ न, भले ही फिर उसने नासमझी से या लौकिक समझ से ऐसा भाव किया कि 'सेठ के दबाव में आकर दिया, वर्ना मैं दूँ ऐसा नहीं हूँ।' लेकिन यह उल्टा ज्ञान है। मुझ जैसा कोई उसे मिल जाए तो उसे समझाए कि बोल, 'सेठ थे इसलिए दे पाया, ये बहुत अच्छा हुआ।' उसे समझाए बिना सीधा ज्ञान उसकी समझ में नहीं आएगा।

अंदर का भाव वह सूक्ष्मकर्म

प्रश्नकर्ता : दादाजी, स्थूलकर्म के बारे में और ज़्यादा समझाइए।

दादाश्री : स्थूलकर्म यानी क्या वह समझाता हूँ। मान लो तुम्हें एकदम से गुस्सा आ गया। तुम्हें गुस्सा करना नहीं है फिर भी गुस्सा आ जाता है, ऐसा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : वह गुस्सा आया उसका फल यहीं पर तुरंत मिल जाता है। लोग कहेंगे कि, 'जाने दो न, ये तो हैं ही बहुत क्रोधी।' फिर शायद कोई पलटकर तुम्हें भी धौल लगा दे। यानी, अपयश से या किसी और तरीक़े से उसे यहीं फल मिल जाता है। अर्थात् गुस्सा आना वह स्थूलकर्म है। और गुस्सा आया तो उसके लिए भीतर तुम्हारा आज का भाव ऐसा है कि 'गुस्सा करना चाहिए' तो फिर अगले जन्म में फिर से गुस्सा करने का हिसाब आएगा। और अगर तुम्हारा आज का भाव यह है कि 'गुस्सा नहीं करना चाहिए', तुम्हारे मन में तय है कि गुस्सा करना ही नहीं है, फिर भी हो जाए तो तुम्हें अगले जन्म के लिए बंधन नहीं रहा। स्थूलकर्म में तुम्हें गुस्सा आया तो इस जन्म में तुम्हें उसके लिए मार खाना पड़ेगा, फिर भी तुम्हें अगले

जन्म का बंधन नहीं आएगा। क्योंकि, सूक्ष्मकर्म में तुम्हारा निश्चय है कि गुस्सा करना ही नहीं चाहिए। और मान लो कोई व्यक्ति किसी पर भी गुस्सा नहीं करता, लेकिन मन में कहता है कि, 'ये लोग ऐसे हैं कि उन पर गुस्सा करें तो ही वे सीधे होंगे।' फिर इससे अगले जन्म में वो फिर गुस्सेवाला बन जाता है! मतलब, जो गुस्सा आता है वह स्थूलकर्म है और उस वक्त भीतर जो भाव होते हैं वह सूक्ष्मकर्म है।

भाव बिगड़े तो बिगड़े जन्म

प्रश्नकर्ता : दादाजी, और एक उदाहरण देकर समझाइए।

दादाश्री : कोई व्यक्ति कहता है कि 'चोरी करनी ही चाहिए' और वह चोरी करता है, रिश्वत लेता है। लोगों के साथ अच्छी-अच्छी बातें करता है और कहता है कि 'तुम्हारे लिए ऐसा कर दूँगा, वैसा कर दूँगा, तुम्हारा सारा काम पूरा कर दूँगा।' इस प्रकार उसके पास हज़ार रुपये रिश्वत के भी लेता है। ये जो सारे कार्य करता है, वह (पूर्वभव में) योजना थी वो रूपक में आई है। वह जो बात करता है वो भी रूपक, ये व्यक्ति उसको मिला वह भी रूपक और हज़ार रुपये लेता है वह भी रूपक। रिश्वत लेने के भाव उसके 'डिसाइडेड' (पहले से तय) हैं और वो भी राज़ी खुशी से लेता है। लेकिन फिर मन में भाव आते हैं कि 'ये रिश्वत लेकर भुगतना तो मुझे ही पड़ेगा न! रिश्वत नहीं लेनी चाहिए।' अगले जन्म के लिए 'रिश्वत नहीं लेनी चाहिए' ऐसी योजना वहाँ बन गई। तो फिर वह अगले जन्म में रिश्वत नहीं लेगा। आपकी समझ में आती है ये रूपरेखा?

कई लोग रिश्वत नहीं लेते। घर में उनकी वाइफ (पत्नी) उनको कहती रहती है कि, 'आपके साथ जो पढ़ते थे, उन सभी ने बंगले बना लिए, सिर्फ आप ही किराये के घर में रहते हो।' फिर उनको ऐसा लगता है कि 'मेरी कोई गलती है कि क्या है?' वे अपने सिद्धांत को सही मानते हैं, खुद को श्रद्धा है कि अपना सिद्धांत सुखदायी है, ऐसा सबकुछ जानते हैं। लेकिन जब उनकी पत्नी उन्हें ऐसा कहती है, तब उनके मन में ऐसा लगता है कि 'मैं रिश्वत नहीं लेता ये मेरी गलती है।' तब विपरीत बुद्धि उन्हें घेर लेती है कि, 'हमें उसका (सामनेवाले का) काम तो कर ही देना है, तो फिर रिश्वत लेने में क्या हर्ज़ है?' फिर ऐसा भाव करते हैं कि रिश्वत लेनी ही चाहिए, फिर वह सामनेवाले व्यक्ति से कहते हैं कि, 'तुम्हारा काम मैं कर दूँगा।' इस पर सामनेवाला व्यक्ति कहता है कि, 'साहब, मैं आपको पाँच-सौ रुपये दूँगा।' फिर बाद में जब वो रुपये देने आता है, तब उनसे लिए नहीं जाते, भीतर घबराहट होने लगती है, मुसीबत हो जाती है। क्योंकि, पूर्वजन्म में ऐसी प्रतिष्ठा की थी कि 'रिश्वत लेना गलत है, रिश्वत लेनी ही नहीं चाहिए।' ये प्रतिष्ठा रिश्वत नहीं लेने देती। सामनेवाले से कहा होता है कि तुम रिश्वत लाना। लेकिन लेते समय हाथ काँप जाते हैं, स्पर्श नहीं होने देते। यानी उनसे एक पैसा भी नहीं लिया जाता, लेकिन अगले जन्म के लिए 'रिश्वत लेनी है' ऐसा फिर से नया बीज पड़ता है। इस जन्म में कुछ भी नहीं लिया और अगले जन्म के बीज डाले।

फिर भी पुरुषार्थ से सुधरता है जन्म

एक ऑफिसर हो, वह इस जन्म में रिश्वत लेते हैं, लेकिन उन्हें ऐसा भाव होता रहता है कि 'रिश्वत ले रहा हूँ वो गलत है, ये क्यों लेता हूँ?' इससे फिर अगले जन्म में वह रिश्वत नहीं लेते। और, एक पैसा भी नहीं लेते फिर भी लेने के भाव हैं, उन्हें भगवान पकड़ते हैं। वो अगले जन्म में चोर बनेंगे और संसार (जन्म) बढ़ाएँगे।

प्रश्नकर्ता : और जो पछतावा करते हैं वे छूट गए, ऐसा कह सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, वे छूट जाते हैं। मतलब कुदरत के यहाँ अलग प्रकार का न्याय है। यहाँ पर जैसा है, वहाँ वैसा नहीं है। आपकी समझ में यह बात आती है?

भाव का कारण अज्ञानता

प्रश्नकर्ता : कौन-सी भूल के आधार पर ऐसे भाव हो जाते हैं? उदाहरण के तौर पर, रिश्वत लेने का भाव होना।

दादाश्री : वो तो उसके ज्ञान की भूल है। वास्तविक ज्ञान क्या है उसका उसे 'डिसिज़न' (पता) नहीं है। अज्ञानता को लेकर भाव होते हैं। क्योंकि, उसे ऐसा लगता है कि इस दुनिया में ऐसा नहीं करूँगा तो मेरी क्या हालत होगी? मतलब उसका अपने ज्ञान पर से भी निश्चय टूट गया है। खुद का ज्ञान गलत है ऐसा वह जानता है। यह ज्ञान, मोक्ष का ज्ञान नहीं है। यह व्यवहार का ज्ञान है। और 'टेम्पररी' रूप में ही होता है कि जो संयोगवश निरंतर बदलता ही रहता है।

उल्टे-सुल्टे भाव लौकिक ज्ञान के अधीन

अब तक जगत् का जो कुछ भी ज्ञान वह समझा है, व्यवहारिक ज्ञान, उस व्यवहारिक ज्ञान से ही अपना काम चलाता है।

प्रश्नकर्ता : वो तो दूसरे नंबर पर व्यवहारिक ज्ञान से काम लेता है। लेकिन पहले नंबर का जो है वो धक्का कहाँ से आया?

दादाश्री : वह व्यवस्थित के अधीन आया। हाँ, वह निर्जरा होते समय आया। कर्म की निर्जरा होती है न!

प्रश्नकर्ता : और वह निर्जरा, यानी (नये) बंध नहीं पड़े इसलिए होती है न?

दादाश्री : वहाँ पुरुषार्थ करना है। और निर्जरा ऐसी भी होती है कि मान लो उदाहरण के तौर पर कोई एक व्यक्ति कभी चोरी नहीं करता हो, लेकिन कभी किसी ऐसी जगह पर बैठा हो तो अंदर निर्जरा तो अच्छी ही होती है, लेकिन वहाँ पर सोना और गहने वगैरह सब पड़ा हो तो अकेला पड़ते ही उसके मन में चोरी का भाव आ जाता है, इसे उल्टा पुरुषार्थ कहा। लेकिन चोरी नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : नहीं करता लेकिन भाव हुआ।

दादाश्री : ऐसा भाव हुआ वह उल्टा पुरुषार्थ हुआ।

प्रश्नकर्ता : मतलब फिर से बीज डाला।

दादाश्री : हाँ, बीज डाला।

प्रश्नकर्ता : अब वह नैमित्तिक धक्के से हुआ?

दादाश्री : नहीं, उल्टा पुरुषार्थ था। निमित्त से तो वह वहाँ पर आया था, आ तो गया लेकिन पुरुषार्थ उल्टा करता है।

प्रश्नकर्ता : मन में थोड़ी उलझन थी उसका सोल्युशन (हल) नहीं आ रहा था कि नैमित्तिक धक्के से यदि भाव होता है तो फिर वो भी अपने बस की बात नहीं रही न।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। बस की बात तो है ही न! कुएँ में क्यों नहीं गिरता?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, जो गिरनेवाला हो वह तो गिरता ही है।

दादाश्री : वह गिरता है, लेकिन और कोई क्यों नहीं गिरता?

प्रश्नकर्ता : क्योंकि उसका वैसा संजोग है।

दादाश्री : नहीं। उसके ज्ञान के अधीन उल्टे-सुल्टे भाव होते हैं न!

प्रश्नकर्ता : यानी भाव भी निकाल देना चाहिए, ऐसा?

दादाश्री : भाव ही निकाल देना है। भाव की ही झंझट है। वस्तु की झंझट नहीं है। भगवान के यहाँ, हक़ीक़त में क्या हुआ इसकी झंझट नहीं है। भाव वह 'चार्ज' है और बाहर हक़ीक़त में जो भी कुछ होता है वह 'डिस्चार्ज है'।

इतने बड़े जगत् में मनुष्य कौन-से बीज नहीं डालता होगा? और क्या करने से फँसते होंगे, इसका कैसे पता चले? सिद्धांत है न! नियमानुसार सिद्धांत है न!

अर्थात् प्रारब्ध और पुरुषार्थ, यह सब समझ जाए न, तो उसका सब राह पर आ जाए। कहीं पर भी भाव नहीं बिगड़ने दे। जहाँ भाव बिगड़े कि तुरंत सुधार ले वहाँ तो आपत्ति ही नहीं है।

मोक्ष जाने में बाधक सूक्ष्मकर्म ही

आपके स्थूलकर्म बाधक नहीं हैं। यह मैंने 'ओपन' (खुला) किया है। यह साइन्स 'ओपन' नहीं करूँ तो भीतर डर, डर, डर ही रहता है, भीतर घबराहट, घबराहट, घबराहट रहती है! साधु कहते हैं कि हम मोक्ष में जाएँगे। अरे, आप लोग कैसे मोक्ष में जाओगे? क्या छोड़ना है (त्याग करना है) वह तो आप जानते नहीं हो। आपने तो स्थूल को छोड़ा है। जो आँखों से दिखाई दे, कानों से सुनाई दे, वो सब छोड़ा। उसका फल तो इसी जन्म में मिल जाएगा। यह साइन्स नये ही प्रकार का है! यह तो अक्रम विज्ञान है, जिससे इन लोगों को सभी तरह से 'फेसिलिटि' (सहुलियत) मिल जाती है। पत्नी को छोड़कर भाग सकते हैं क्या? पत्नी को छोड़कर भाग जाएँ और अपना मोक्ष हो जाएगा, क्या ऐसा हो सकता है? इसलिए पत्नी-बच्चों के प्रति सारे फ़र्ज़ अदा करने हैं। और पत्नी जो भी खाना दे उसे आराम से खाओ, लेकिन वह सब स्थूल है, यह समझ लेना! स्थूल के प्रति आपका अभिप्राय ऐसा नहीं होना चाहिए जिसके कारण सूक्ष्म में चार्ज हो। इसलिए मैंने आपको 'पाँच वाक्य' (पाँच आज्ञा) दिए हैं। भीतर ऐसा अभिप्राय नहीं रहना चाहिए कि यह 'करेक्ट' है। 'मैं जो करता हूँ, जो भोगता हूँ, वह करेक्ट है।' ऐसा अभिप्राय नहीं होना चाहिए। बस, आपका इतना अभिप्राय ही बदला कि सब हो गया।

भाव से बंधते हैं सूक्ष्मकर्म

प्रश्नकर्ता : दादाजी, सूक्ष्मकर्म कैसे बंध जाते हैं?

दादाश्री : कलियुग में जो उपचार किया जाता है वह उपचार, दवाईयाँ गलत हैं। जैसे कि, एक व्यक्ति दान दिया करता हो, धर्म की भक्ति करता हो, मंदिरों में पैसे दें और हमेशा ऐसे ही धर्म के कार्य करता हो, तो उसे जगत् के लोग क्या कहते हैं? कि 'यह धर्मिष्ठ है।' अब उस व्यक्ति के अंदर ऐसे विचार होते हैं कि 'किस तरह मैं कमाऊँ और किस तरह भोग लूँ।' उसके अंदर तो *अणहक्क* (बिना हक़ का) का हड़प लेने की इच्छा होती है। इस कलियुग में लोगों को *अणहक्क* का हड़प लेने की बहुत इच्छा होती है। *अणहक्क* का हड़प लेने को लोग तैयार रहते हैं। बाहर तो बड़े-बड़े दान करता है, धर्म के ही आचार हैं, लेकिन भीतर *अणहक्क* की लक्ष्मी और विषय भोगने के विचार करता है, इसलिए भगवान उसका एक पैसा भी जमा नहीं करते। इसका क्या कारण है? कारण यह है कि ये सारे स्थूलकर्म हैं। बाहर जो दिखते हैं, आचार में जो दिखते हैं, वे सारे स्थूलकर्म हैं। लोग स्थूलकर्मों को ही अगले जन्म के कर्म मानते हैं। लेकिन उनका फल तो यहीं पर मिल जाता है। और सूक्ष्मकर्म जो अंदर बंध रहा है, जिसका लोगों को पता ही नहीं है, उसका फल अगले जन्म में मिलता है।

आज किसी व्यक्ति ने चोरी की, वह चोरी स्थूलकर्म है। और उसका फल इसी जन्म में मिल जाता है। जैसे कि उसे अपयश मिलता है, पुलिसवाला मारता है, इस प्रकार सारा फल उसे यहीं पर मिल ही जाता है। ये दानेश्वरी दान देते हैं तो लोग किर्ती फैलाते हैं कि 'अरे! बड़े दानेश्वरी सेठ हैं।' और सेठ तो भीतर बुरा सोचते रहते हैं। मतलब सूक्ष्मकर्म करते हैं। अर्थात् ये जो स्थूलकर्म दिखते हैं, स्थूल आचार दिखते हैं वे वहाँ काम नहीं आते। वहाँ तो सूक्ष्म विचार क्या हैं? सूक्ष्मकर्म क्या हैं? इतना ही वहाँ काम आता है। पूरा जगत् स्थूलकर्म पर ही 'एडजस्ट' हो गया है। ये सभी साधु-सन्यासी त्याग करते हैं, तप करते हैं, जप करते हैं, लेकिन वह सारा तो स्थूलकर्म है। उसमें सूक्ष्मकर्म कहाँ है? अगले जन्म का सूक्ष्मकर्म उसमें नहीं है। यहाँ जो करते हैं उस स्थूलकर्म का यश उन्हें यहीं पर मिल जाता है। आचार्य महाराज प्रतिक्रमण करते हैं, सामायिक करते हैं, व्याख्यान देते हैं, प्रवचन करते हैं, लेकिन ये तो उनका आचार है, यह स्थूलकर्म है। लेकिन भीतर क्या है वह देखना है। भीतर जो 'चार्ज' होता है वे वहाँ पर काम लगेंगे। अभी जिस आचार का पालन करते हैं वह डिस्चार्ज है। पूरा बाह्याचार ही डिस्चार्ज स्वरूप है और उस पर लोग कहते हैं कि, 'मैंने सामायिक किया, ध्यान किया, दान दिया।' उसका यश तो तुम्हें मिलेगा। लेकिन उसमें अगले जन्म के साथ क्या लेना-देना है? भगवान इतने भोले नहीं हैं कि तुम्हारी ऐसी पोल को चलने दे। बाहर सामायिक करता है और भीतर कुछ और करता है। एक सेठ सामायिक करने बैठे थे, और बाहर से किसीने दरवाज़ा खटखटाया। सेठानी ने जाकर दरवाज़ा खोला। एक भाईसाहब आए थे, उन्होंने पूछा, 'सेठ कहाँ गए हैं?' तब सेठानी ने जवाब दिया, 'कूड़े-खाने।' अंदर सेठ ने ये सुना और भीतर देखा तो वास्तव में वह कूड़े-खाने ही गए थे। भीतर तो खराब विचार चल रहे थे और बाहर सामायिक कर रहे थे। भगवान ऐसे पोल को नहीं चलाते। भीतर सामायिक चलता हो और बाहर सामायिक ना भी हो तो उसका 'वहाँ' चलेगा। ये बाहर के दिखावे 'वहाँ' चलें ऐसे नहीं है।

गुनाह से छूट सकते हैं, पछतावा करके

प्रश्नकर्ता : हम कारोबार करते हैं, हम किसीसे कहें 'तुम मेरा माल बिकवाओ, उसमें तुम्हें हम एक-दो प्रतिशत देंगे।' तो यह गलत काम ही है न?

दादाश्री : गलत काम हो रहा है वह आपको अच्छा लगता है या अच्छा नहीं लगता।

प्रश्नकर्ता : अच्छा लगना वो अलग प्रश्न है। लेकिन अच्छा नहीं लगता हो तो भी करना पड़ता है, व्यवहार के लिए।

दादाश्री : हाँ। इसलिए जो करना पड़ता है, वह अनिवार्य है। तो इसमें आपकी इच्छा क्या है? ऐसा करना है या नहीं करना है?

प्रश्नकर्ता : ऐसा करने की इच्छा नहीं है, लेकिन करना पड़ता है।

दादाश्री : वह अनिवार्य रूप से करना पड़ता है, उसका पछतावा होना चाहिए। आधा घंटा बैठकर पछतावा करना चाहिए कि, 'ये नहीं करना है फिर भी करना पड़ता है।' पछतावा ज़ाहिर कर दिया इसलिए हम गुनाह में से छूट गए। हमारी इच्छा नहीं होने के बावजूद भी अनिवार्य ही करना पड़ता है, उसका प्रतिक्रमण कर लेना है। और कई लोग कहते हैं कि, 'हम ये जो करते हैं वही बराबर है, ऐसा ही करना चाहिए,' तो उनको वैसा फल मिलेगा। ऐसा करके खुश होते हों, ऐसे मनुष्य भी हैं न! आप भारी कर्मवाले नहीं हो इसलिए आपको पछतावा होता है वर्ना लोगों को तो पछतावा भी नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर से रोज़ गलत तो करने ही वाले हैं।

दादाश्री : बात गलत करने की नहीं है। यह जो पछतावा करते हो वही आपके भाव हैं। हो गया सो हो गया। वह तो आज 'डिस्चार्ज' है और 'डिस्चार्ज' में किसीका चलता ही नहीं। 'डिस्चार्ज' यानी अपने आप स्वाभाविक ही परिणाम में आना। और 'चार्ज' यानी क्या? कि खुद के भाव सहित होना चाहिए। कई लोग गलत करते हैं और फिर भाव में भी ऐसा ही रहता है कि 'ये ठीक ही हो रहा है', तो वह मरा समझो। लेकिन जिसे पछतावा होता है, उसका ये गलत मिट जाएगा।

परिणाम तो, कॉज़ेज बदलने से ही बदलेंगे

एक भाईसाहब मुझसे कहने लगे कि, 'अनंत जन्मों से क्रोध को निकाल रहे हैं, लेकिन क्रोध क्यों नहीं जाता?' तब मैंने कहा कि, 'आप क्रोध निकालने के उपाय नहीं जानते होंगे।' तब वो कहने लगे कि, 'क्रोध निकालने के उपाय तो शास्त्रों में जितने लिखें हैं वे सारे करता हूँ, फिर भी क्रोध नहीं जाता।' तब मैंने कहा कि, 'सम्यक उपाय होना चाहिए।' तब वो कहने लगे कि, 'सम्यक उपाय तो बहुत पढ़ लिए, लेकिन उनमें से कोई भी काम नहीं आया।' फिर मैंने कहा कि, 'क्रोध को बंद करने के लिए उपाय ढूँढना वह मूर्खता है, क्योंकि क्रोध वह तो परिणाम है। जैसे कि, आपने परीक्षा दी हो और रिझल्ट (परिणाम) आया, अब रिझल्ट को नाश करने का उपाय करें, उसके जैसी बात है। यह रिझल्ट जो आया, वह किसका परिणाम है, उसे हमें बदलने की ज़रूरत है।'

लोग क्या कहते हैं कि, 'क्रोध को दबाओ, क्रोध को निकालो।' अरे! किसलिए ऐसा करते हो? बिना मतलब के दिमाग खराब करते हो! और फिर भी क्रोध तो निकलता नहीं है। लेकिन तब फिर भी वह कहेगा, 'नहीं साहब, थोड़ा क्रोध दब गया है।' अरे, भीतर जब तक है तब तक दबा हुआ नहीं कह सकते। तब वह भाईसाहब कहने लगे कि, 'तो फिर आपके पास और कोई उपाय है?' मैंने कहा, 'हाँ, उपाय तो है, आप करोगे?' उन्होंने कहा, 'हाँ।' तब मैंने कहा कि, 'एक बार नोट करो कि इस जगत् में खास करके किस पर क्रोध आता है?' जहाँ-जहाँ क्रोध आए उसे 'नोट' कर लो, और जहाँ क्रोध नहीं आता उसे भी समझ लो। एक बार लिस्ट बना लो कि इस व्यक्ति पर क्रोध नहीं आता। कई लोग उल्टा काम करते हों तो भी उन पर क्रोध नहीं आता और कई लोग तो बेचारे सीधा काम करते हों तो भी उन पर क्रोध आ जाता है, मतलब कोई कारण होगा न?

प्रश्नकर्ता : जिस पर क्रोध आता है, उसके लिए मन के अंदर ग्रंथि बंध गई होगी?

दादाश्री : हाँ, ग्रंथि बंध गई है, अब उस ग्रंथि को छोड़ने के लिए क्या करना चाहिए? परीक्षा तो दे दी। जितनी बार उस पर क्रोध आनेवाला है उनती बार आ जाएगा और उसके लिए ग्रंथि भी बंध गई है, लेकिन अब से हमें क्या करना चाहिए? जिस पर क्रोध आता हो उसके लिए मन बिगड़ने नहीं देना चाहिए। मन सुधार लेना है कि, 'हमारे प्रारब्ध के कारण यह व्यक्ति ऐसा करता है, वह जो कुछ भी करता है वह हमारे कर्म का उदय है इसलिए ऐसा करता है।' इस तरह हमें मन को सुधार लेना है। मन को ऐसे सुधारते रहोगे और सामनेवाले पर मन सुधर जाएगा तो फिर उस पर क्रोध आना बंद हो जाएगा। थोड़े समय के लिए जब तक पिछली इफेक्ट है, पहले की इफेक्ट, उतनी इफेक्ट देकर फिर बंद हो जाएगा।

यह थोड़ी सूक्ष्म बात है और लोगों को मिली नहीं है। हर एक का उपाय तो होता ही है न! उपाय नहीं हो ऐसा तो जगत् में हो ही नहीं सकता न! लेकिन जगत् तो परिणाम को ही नाश करना चाहता है।

नहीं होने चाहिए क्लेश, परिणाम में

मतलब, क्रोध-मान-माया-लोभ के उपाय ये हैं। परिणाम को कुछ मत करो, उसके कॉज़ेज को उड़ा दो तो ये सारे चले जाएँगे। इसलिए खुद विचारक होना चाहिए। वर्ना, अजागृत होगा तो किस तरह उपाय करेगा?

पूरा जगत् परिणाम में ही क्लेश कर रहा है। बेटा अनुत्तीर्ण हुआ उसके लिए क्लेश नहीं करना चाहिए। जब वह पढ़ रहा हो तब हमें कहना चाहिए कि, 'तू पढ़, पढ़!' उसे टोको, डाँटो, लेकिन अनुत्तीर्ण होने के बाद तो उससे कहना है कि, 'बैठो खाना खा लो! नदी में डूबने मत जाना!'

जगत् वश होता है प्रेम से ही

प्रश्नकर्ता : बच्चे अगर बुरी लाइन पर चढ़ जाएँ (बुरी आदतें लग जाए) तो माँ-बाप का फ़र्ज़ है न कि उन्हें वहाँ से सही राह पर वापस लाएँ?

दादाश्री : ऐसा है, कि माँ-बाप बनकर उन्हें कहना चाहिए, लेकिन आजकल माँ-बाप हैं ही कहाँ?

प्रश्नकर्ता : माँ-बाप किन्हें कहा जाता है?

दादाश्री : माँ-बाप तो उन्हें कहा जाता है कि अगर बेटा बुरी लाइन पर चढ़ गया हो, और एक दिन माँ-बाप कहें कि, 'बेटा, यह हमें शोभा नहीं देता, यह तुमने क्या किया?' तो दूसरे ही दिन से वह उस लाइन को छोड़ देता है। ऐसा प्रेम ही कहाँ है? ये तो बिना प्रेमवाले माँ-बाप। यह जगत् प्रेम से ही वश होता है। माँ-बाप को बेटे पर कितना प्रेम है? गुलाब के पौधे पर माली को जितना प्रेम होता है, उतना! इन्हें माँ-बाप कैसे कह सकते हैं? माँ या बाप की ज़िम्मेदारी तो देश के प्रधानमंत्री की ज़िम्मेदारी से भी ज़्यादा है, प्रधानमंत्री से भी ऊँचा पद है।

सन्मार्ग पर मोड़ो प्रेम से

बेटे में बुरे गुण हों तो माँ-बाप उसे झिड़काते हैं और कहते फिरते हैं कि, 'मेरा बेटा तो ऐसा है, नालायक है, चोर है।' अरे! वह ऐसा करता है उसको छोड़ो न! लेकिन अब तो उसके भाव बदल दो न! उसके भीतर के अभिप्राय को बदल दो न! उसके भाव को कैसे बदलना यह माँ-बाप को नहीं आता। क्योंकि 'सर्टिफाइड' माँ-बाप नहीं हैं। 'सर्टिफ़िकेट' है नहीं और माँ-बाप बन गए हैं। बेटे को यदि चोरी की बुरी आदत लग गई हो तो माँ-बाप उसे झिड़काते रहते हैं, मारते रहते हैं, कि 'तुझमें अक़्ल नहीं है, तुम ऐसा करते हो, वैसा करते हो।' यों सुनाते रहते हैं। इस तरह, माँ-बाप 'एक्सेस' (ज़रूरत से ज़्यादा) बोलते हैं! 'एक्सेस' बोला हुआ कभी भी 'हेल्प' नहीं करता। फिर बेटा क्या करता है? मन में तय करता है कि 'वे भले ही बोलते रहें, मैं तो यही करूँगा।' मतलब बेटे को माँ-बाप और भी चोर बनाते हैं। द्वापर, त्रेता और सतयुग में जो हथियार थे उनको आज कलियुग में लोगों ने इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। बेटे को बदलने का तरीका अलग है। उसके भाव बदलने हैं। उसके सिर पर प्रेम से हाथ घुमाकर कहना है कि, 'आओ बेटे! तुम्हारी माँ भले ही चिल्लाए! लेकिन तुम जिस तरह किसी का चुरा लेते हो, वैसे ही अगर कोई तुम्हारी जेब में से चोरी कर ले तो क्या तुम्हें खुशी होगी? उस समय भीतर तुम्हें कितना दुःख होगा? वैसे ही, तुमने जिसका चुराया क्या उसे दुःख नहीं होता होगा?' इस तरह पूरी 'थिअरी' बेटे को समझानी पड़ती है। एक बार उसके मन में बैठ जाना चाहिए की यह गलत है। आप उसको मारते रहो तो उससे तो बच्चे ज़िद पर अड़ते हैं। सिर्फ तरीका ही बदल देना है।

सुधारने के लिए दीजिए सही समझ

एक व्यक्ति हर तरह से दोषित बन गया हो,

तो उसके दोषों को कम करना चाहिए। लेकिन दोष तो आचार है और आचार उदयाधीन है। इसलिए कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हम डाँटते रहते हैं लेकिन कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता और वह नहीं सुधरता। डाँटते रहने से वह उल्टे भाव करता है। बाप बेटे को डाँटे कि 'रोज़ तुम क्यों हॉटल में जाते हो?' वह जाना नहीं चाहता फिर भी जाता है, बेचारे के पास चारा नहीं है। जाना नहीं चाहता फिर भी उदय (कर्म) उसे फिर से ले जाता है। और बाप कहता है कि, 'तुम क्यों गए?' यानी ज़्यादा कहने से बेटा बाप से तो कहता है कि 'मैं नहीं जाऊँगा' लेकिन मन में तय कर लेता है कि, 'मैं तो जाऊँगा ही, ये भले ही बोलते रहें।' ये तो भाव बिगाड़ते हैं। लोगों को बाप की तरह जीना नहीं आता, माँ की तरह जीना नहीं आता, गुरु की तरह जीना नहीं आता। मुझे ऊँची आवाज़ में कहना पड़ता है। क्या आपको जीना आता है?

आज के जो आचार हैं, वे सारे इफेक्ट हैं। तुम क्यों उपवास नहीं करते? तब कहे, 'मुझ से नहीं होता।' अरे मुआ, उपवास क्यों नहीं होते? अगर ऐसा कॉज़ किया हो तो उपवास हो सकते हैं। यानी आज क्या कर रहे हैं ये देख लेना चाहिए और जो आचार काम के नहीं हों, उसके लिए हमें उसके ज्ञान को बदल देना चाहिए। उसका ज्ञान बदलना है। बाकी, पीटते रहो तो मन में क्या भाव करता है, कि चोरी करनी ही चाहिए। ऐसा मन में तय करता है और गलत राह पर चलता है। डराना नहीं चाहिए। फ़ादर (पिता) तो कितने संस्कारी होते हैं! जिनके संस्कार से सभी बच्चे सयाने बन जाएँ। आप उस बेचारे के लिए उपाय नहीं जानते। बेटा चोरी करता है, लेकिन फ़ादर को यह उपाय पता ही नहीं है, वह तो यही समझते हैं कि बेटा ही चोरी करता है और उसे बंद करना हो तो कर सकते हैं। वो बंद करने से हो जाती है। तो फिर तुम्हारा बंद करो न, तुम्हारे जो दोष हैं उन्हें बंद करो न! गुरु महाराज सभी से ऐसा कहते हैं कि यह त्याग दो, वह त्याग दो। लेकिन महाराज, आपकी सुँघनी छोड़ दीजिए न! आपका क्रोध छोड़ दीजिए न! इस क्रोध से सबको दु:खी करते हो, उसे छोड़ दीजिए। क्रोध के लिए सभी कहते हैं कि, 'तुम क्रोध को छोड़ दो।' लेकिन नहीं छोड़ते!

देखो न, आपका क्रोध हमने (दादाश्री) सुधार दिया न। आपके काबू में नहीं रहता था, लेकिन सुधार दिया न?

क्लेश से बिगड़ते हैं भाव और जन्म

प्रश्नकर्ता : समाज की व्यवस्था भी सँभालकर रखनी पड़ती है, वर्ना वो अव्यवस्थित हो जाएगी।

दादाश्री : नहीं, उसे समाज की व्यवस्था सँभाली ऐसा नहीं कहा जाता। नहीं समझने के कारण खुद इस तरह बरतता है, गुस्सा करने की ज़रूरत नहीं है। समाज ऐसा नहीं कहता कि गुस्सा करो।

प्रश्नकर्ता : किन्तु मान लीजिए की यहाँ कुछ गुंडे चोरी करते हों और पुलिसवाले उन्हें दंड नहीं दें तो ऐसा तो नहीं चलेगा न! दंड तो देना ही चाहिए न?

दादाश्री : वो तो देना ही पड़ेगा, उसमें चलेगा ही नहीं। दंड दो उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन गुस्सा होने में हर्ज है। कमज़ोर नहीं पड़ना चाहिए। मेरे कहने का मतलब यह है कि कमज़ोर पड़ोगे तो सामनेवाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं पड़ेगा और प्रभाव नहीं पड़ेगा तो कार्य नहीं होगा। हमेशा कोई भी कार्य प्रभाव से ही होता है। मतलब हमें सोचकर काम लेना चाहिए। और हम अगर कमज़ोर हैं तो बोलना ही नहीं चाहिए। ऐसी कमज़ोरी से ही बच्चे बिगड़ जाते हैं। और बेचारों का अगला जन्म बिगड़ता है। अभी तो हमारे कहे अनुसार करेंगे, लेकिन मन में भाव करेंगे कि, 'मुझे गलत कहते हैं, तो मैं अब

गलत राह पर ही चलूँगा।' यानी, उसका अगला जन्म भी बिगाड़ते हैं। अगला जन्म नहीं बिगड़े इसलिए हमें उसे धीरे से कहना है।

भावसत्ता अपने हाथ में

प्रश्नकर्ता : भाव किस तरह बदलते हैं?

दादाश्री : द्रव्य किसी के ताबे में नहीं है। भाव ही हमारे ताबे में है। इसलिए कुछ गलत हो जाए तो पछतावा कर लो। हमारा (दादाश्री) द्रव्य भी अच्छा होता है और भाव भी अच्छे होते हैं। आपका स्वच्छंदपूर्वक का द्रव्य होता है इसलिए पछतावा करना पड़ता है।

भीतर से चोरी करने की गाँठ फूटती है तब तुम्हें चोरी करने का विचार आता है। बड़ी गाँठ हो तो ज़्यादा विचार आते हैं और चोरी भी कर आता है। और फिर कहता भी है कि मैंने कितनी चालाकी से चोरी की! ऐसा कहे, इसलिए चोरी की गाँठ को खुराक मिल जाती है। पोषण मिलने से नये बीज गिरते रहते हैं और चोरी की गाँठ और भी बड़ी होती रहती है। अब कोई दूसरा चोर हो वह चोरी तो करता है लेकिन साथ-साथ उसे भीतर चुभता रहता है कि, 'मुझ से यह जो चोरी हो रही है वह बहुत गलत हो रहा है, लेकिन क्या करूँ? पेट भरने के लिए करनी पड़ती है।' वह हृदयपूर्वक पश्चाताप करता रहता है इसलिए चोरी की गाँठ को पोषण नहीं मिलता। और अगले जन्म के लिए चोरी नहीं करने के बीज डालता है, फिर, दूसरे जन्म में चोरी नहीं करता।

'वह' है पुरुषार्थ

किसीको भी हमसे किंचित्मात्र दु:ख नहीं होना चाहिए। यह तो अन्जाने में ही अपार दु:ख हो जाते हैं। सामनेवाले को दु:ख नहीं लगे इस तरह से आप काम लो, उसे क्रमण कहते हैं। लेकिन अतिक्रमण कब कहा जाता है? जैसे कि, आपको जल्दी हो और यहाँ यह व्यक्ति चाय पीने गया हो, फिर वह आए कि तुरंत ही आप चिल्लाने लगो कि, 'कहाँ गए थे? नालायक हो, ऐसे हो और वैसे हो', यह सब अतिक्रमण किया कहलाता है। और ऐसा आपसे स्वाभाविक ही हो जाता है। ऐसा करने की आपकी इच्छा नहीं होती।

अतिक्रमण होना वह स्वाभाविक है, किन्तु प्रतिक्रमण करना वह अपना पुरुषार्थ है। मतलब, जो किया होता है वह मिट जाता है। लगा हुआ दाग़ प्रतिक्रमण से तुरंत मिट जाता है।

जब भाव बिगड़ें !

आप इस समय यहाँ आए और यहाँ पर बहुत भीड़ हो, तो किसीको ऐसा विचार आ जाए कि, 'यह अभी क्यों आया?' भीतर ऐसे विचार आ जाते हैं लेकिन वाणी कैसी निकलती है? कि 'आइए, आइए, पधारिए।' विचार आया वह अतिक्रमण कहलाता है, उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए। अंदर के भाव नहीं बिगाड़ने हैं, बाहर चाहे जैसा भी हो।

प्रश्नकर्ता : अंदर और बाहर दोनों उत्तम हों तो?

दादाश्री : उसके जैसा तो कुछ भी नहीं है! यदि भीतर का बिगड़ गया हो तो प्रतिक्रमण कर लेना है।

नहीं है गलत कोई भी जगत् में

मान लो यहाँ से बहुत सारी औरतें गुज़र रहीं हों और कोई आपसे कहे कि, 'देखो न वह वेश्या, यहाँ पर आई है, यहाँ कैसे आ गई?' किसी ने आपसे ऐसा कहा तो उसके कारण आपने भी उसे वेश्या कहा, उसका आपको भयंकर गुनाह लगता है। वह कहती है कि, 'संयोगवश मेरी यह स्थिति हुई है। उसमें फिर आप किसलिए गुनाह कर रहे हो? मैं तो मेरा फल भुगत रही हूँ, लेकिन आप क्यों गुनाह कर रहे हो?' वह क्या अपनी मरज़ी से वेश्या हुई

है? संयोग ने बनाया है। किसी जीवमात्र को खराब बनने की इच्छा होती ही नहीं। सबकुछ संयोग ही करवाते हैं। और फिर उसकी प्रैक्टिस (आदत) हो जाती है। शुरूआत संयोग करवाते हैं।

ये तो प्रारब्ध के खेल हैं और वहाँ उनके लिए जो खराब भाव हुए वह अपना भीतर नेगेटिव पुरुषार्थ हो गया, उसका फल हमें भुगतना पड़ता है। उसे वेश्या कहने का फल हमें भुगतना पड़ेगा। पाप भुगतना पड़ेगा। और विचार आना वह तो स्वाभाविक है, लेकिन फिर तुरंत ही भीतर क्या करना चाहिए? कि, 'अरेरे! मुझे ये गुनाह करने की क्या ज़रूरत है?' तुरंत ही, इस तरह सीधा विचार करके हमें प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : माफ़ी माँग लेनी चाहिए?

दादाश्री : हाँ, मन में माफ़ी माँग लेनी चाहिए। प्रतिक्रमण करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मन-वचन-काया से जाने-अन्जाने में जो भी भूलचूक हुई हो, उसकी माफ़ी माँगता हूँ।

दादाश्री : हाँ, 'महावीर' भगवान को याद करके या किसी और भगवान को याद करके, 'दादा' को याद करके प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए कि 'अरेरे! वह (सामनेवाला) चाहे कैसा भी हो, लेकिन मेरे हाथों क्यों उल्टा हो गया?' अच्छे को अच्छा कहने में दोष नहीं है, किन्तु अच्छे को बुरा कहने में दोष है, और बुरे को बुरा कहने में भी बहुत दोष है। जबरदस्त दोष! क्योंकि, वह खुद बुरा नहीं है, उसके प्रारब्ध ने उसे बुरा बनाया है। प्रारब्ध अर्थात् क्या? उसके संयोग ने उसे बुरा बनाया, उसमें उसका क्या दोष?

तय करने लायक 'प्रोजेक्ट'

लोग यों ही मार खाते रहते हैं। इस जगत् में कोई बाप भी आपका ऊपरी नहीं है। आप संपूर्ण रूप से स्वतंत्र हो। किन्तु आपका प्रोजेक्ट ऐसा होना चाहिए कि किसी जीव को आपके द्वारा किंचित्मात्र भी दुःख नहीं लगे। आपका प्रोजेक्ट बहुत बड़ा करो, पूरी दुनिया जितना करो।

प्रश्नकर्ता : ऐसा शक्य है?

दादाश्री : हाँ। मेरा (प्रोजेक्ट) बहुत बड़ा है। किसी भी जीव को दुःख नहीं लगे, इस प्रकार मैं रहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दूसरों के लिए तो यह शक्य नहीं है न?

दादाश्री : शक्य नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सभी जीवों को दुःख देकर अपना प्रोजेक्ट करना है।

इसके लिए कोई नियम तो होना चाहिए न, कि कम से कम दुःख लगे ऐसा प्रोजेक्ट करें! जो आपसे एकदम अशक्य हो ऐसा मैं आपको करने के लिए नहीं कहता।

दुःख नहीं हो किसीको मेरे द्वारा

प्रश्नकर्ता : किसीको दुःख ही नहीं है, तो फिर हम दूसरों को दुःख दें तो उन्हें दुःख कैसे लगता है?

दादाश्री : उसकी मान्यता में से दुःख गया नहीं है न? आप मुझे धौल मारो तो मुझे दुःख नहीं होगा, लेकिन दूसरे की मान्यता में तो मारने से दुःख है, इसलिए उसे मारोगे तो उसे दुःख लगेगा ही। 'रोंग बिलीफ़' अभी गई नहीं है। कोई हमें धौल मारे तो हमें दुःख लगता है, उस 'लेवल' से देखना है। किसको धौल मारते समय मन में लगना चाहिए कि 'मुझे धौल मारे तो क्या होगा?'

हम किसी के पास से दस हज़ार रुपये उधार लाए हों, फिर हमारे संयोग उल्टे आ गए तो मन में

विचार आता है कि 'पैसे वापस नहीं दूँगा तो चलेगा!' उस घड़ी हमें न्याय से परीक्षण करना चाहिए कि, 'अगर मुझ से कोई पैसे ले गया हो और वह मुझे नहीं लौटाए तो मुझे कैसा लगेगा?' ऐसी न्याय बुद्धि होनी चाहिए। कि 'कोई मेरे साथ ऐसा करेगा तो मुझे बहुत दुःख होगा, उसी तरह सामनेवाले को भी दुःख लगेगा, इसलिए मुझे पैसे वापस करने ही हैं।' ऐसा भीतर तय होना चाहिए और ऐसा तय करो तो लौटा सकते हो।

प्रश्नकर्ता : मन में होता है कि यह तो दस करोड़ का असामी है तो हम उसके दस हज़ार नहीं लौटाएँगे तो उसे कोई तकलीफ़ नहीं होगी।

दादाश्री : उसे तकलीफ़ नहीं होगी, ऐसा आपको भले ही लगता हो, लेकिन ऐसा नहीं है। वह करोड़पति अपने बच्चे के लिए एक रुपये की चीज़ लानी हो तो भी सोचकर लाता है। किसी करोड़पति के घर आपने पैसों को यों ही इधर-उधर पड़ा हुआ देखा है? हर एक को पैसा जान की तरह प्यारा होता है।

भावना करने से आएगा हल

हमारे भाव ऐसे होने चाहिए कि हमारे मन-वचन-काया से इस जगत् में किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसके मुताबिक अनुकरण करना वह सामान्य मनुष्य के लिए मुश्किल है न?

दादाश्री : मैं आपको आज ही इसके अनुसार बरतने को नहीं कहता। सिर्फ भावना ही करने के लिए कहता हूँ। भावना अर्थात् आपका निश्चय।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, सिर्फ भाव ही करना है, और कुछ नहीं?

दादाश्री : जो 'चार्ज' हो गया है वह 'डिस्चार्ज' हो रहा है। वह संयोग के स्वरूप में 'डिस्चार्ज' होता है। और उल्टा संयोग आ गया हो उसे सीधा कर लेना वह पुरुषार्थ है। फिसलन में तो हर कोई फिसलता है, उसमें तुमने क्या पुरुषार्थ किया? फिसलने से अटक जाना उसे पुरुषार्थ कहते हैं। एकदम अंधेभूत होकर टकराते रहते हैं, और अपने आप को तो न जाने क्या समझते हैं! यह सबकुछ समझना पड़ेगा न? गलत बात को सत्य माना गया है वो अब कब किनारे लगेगी और कब उसका अंत आएगा? जिसका किनारा नहीं आए उसका अंत आता है क्या?

चार्ज-डिस्चार्ज का साइन्स

प्रश्नकर्ता : दादाजी, 'चार्ज' यानी क्या?

दादाश्री : एक मोटर (गाड़ी) है, वह चाबी देने से चलती है। चाबी देते समय उसे 'चार्ज' कहते हैं। फिर उसे 'डिस्चार्ज' के तौर पर छोड़ दिया, तब उसके बाद क्या वह हमारी सत्ता में है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : फिर वह हमारी सत्ता में नहीं है। जितनी चाबी दी होगी उतनी ही चलेगी। आधी दी होगी तो उतनी ही दूर जाएगी और उससे कम दी होगी तो उतनी कम दूर जाएगी और पूरी चाबी दी होगी तो पूरी दूर जाएगी। उसे हम रोक नहीं सकते। इसे 'डिस्चार्ज' कहते हैं। इसी प्रकार वाणी 'डिस्चार्ज' हो रही है। तीन बेटरियाँ 'डिस्चार्ज' हो रही हैं। वाणी की, वर्तन की और मन की। आपकी इच्छा नहीं हो फिर भी विचार निरंतर 'डिस्चार्ज' होते ही रहते हैं। अच्छे लगते हों या अच्छे नहीं लगते हों, लेकिन विचार तो निरंतर 'डिस्चार्ज' होते ही रहेंगे। एक तरफ़ ये तीन बेटरियाँ 'डिस्चार्ज' होती ही रहती हैं और दूसरी तरफ़ नयी तीन बेटरियाँ 'चार्ज' होती रहती हैं। जब तक खुद को स्वरूपज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है, कोई 'बेझमेन्ट' (नींव) नहीं है, तब तक नयी बेटरियाँ फिर से 'चार्ज' होती रहती हैं। और

फिर 'डिस्चार्ज' होती रहती हैं। यानी ये सिर्फ बेटरियाँ ही हैं। 'मैं चंदूभाई हूँ' ये आरोपित भाव है तब तक अज्ञान को लेकर नयी बेटरियाँ भरती रहती हैं। पुरानी तो हरएक की 'डिस्चार्ज' होती ही रहती है, अज्ञानी की, ज्ञानी की, जानवरों की, सभी की 'डिस्चार्ज' होती ही रहेंगी। उस 'डिस्चार्ज' में कोई मेहनत करनी नहीं होती। 'डिस्चार्ज' स्वभाव यानी अपने आप सबकुछ 'डिस्चार्ज' होता ही रहता है। चार्ज उधित कर्म है और 'डिस्चार्ज' अस्तित (अस्त होते हुए) कर्म है।

'डिस्चार्ज' के समय, अज्ञानता से 'चार्ज'

प्रश्नकर्ता : दादाजी, और ज़्यादा स्पष्टीकरण करीए न।

दादाश्री : मनुष्य में सोने की शक्ति नहीं है, जागने की शक्ति नहीं है, जाने की शक्ति नहीं है और आने की भी शक्ति नहीं है, किसी भी प्रकार की शक्ति उसमें नहीं है। मनुष्य में सिर्फ 'चार्ज' करने की शक्ति है और वह भी खुद की स्वतंत्र शक्ति नहीं है, 'डिस्चार्ज' के धक्के से 'चार्ज' हो जाता है। यदि 'चार्ज' करने की उसकी स्वतंत्र शक्ति होती न तो कभी भी मोक्ष में जा ही नहीं पाता। क्योंकि, फिर वह गुनहगार माना जाएगा और गुनहगार हुआ इसलिए मोक्ष में नहीं जा सकता।

पूरा जगत् 'चार्ज' के वश

जन्म लिया तब से मृत्यु तक सबकुछ 'डिस्चार्ज' होता रहता है। अभी (आज) का मनुष्यपन वह 'डिस्चार्ज' है। पिछले जन्म में मनुष्यपन 'चार्ज' किया था, वह अब 'डिस्चार्ज' हो रहा है। 'डिस्चार्ज' में भगवान भी आपत्ति नहीं करते, लेकिन 'डिस्चार्ज' के समय तुम्हारा ध्यान कहाँ बरतता है उसकी क़ीमत है। भगवान के दर्शन करने मंदिर में गया और भगवान की मूर्ति के दर्शन किए, लेकिन साथ ही बाहर जूते रखे हैं उसका भी ख़्याल रहता है। दर्शन किए वह 'डिस्चार्ज' हुआ और जूतों के ख़्याल में रहे वह 'चार्ज' हुआ।

इच्छा के मुताबिक हुआ वह भी 'डिस्चार्ज' है। इच्छा के मुताबिक नहीं हुआ वह भी 'डिस्चार्ज' है, ये 'डिस्चार्ज' 'नो' (नहीं) बता रहा है।

जीवन-व्यवहार में रोज सामान्य तौर पर ही भीतर पसंद-नापसंद उत्पन्न होता ही रहता है। अपनी इच्छा नहीं हो फिर भी पसंद-नापसंद होता रहता है, लेकिन वह किस कारण पसंद है और किस कारण पसंद नहीं है इसके बारे में कोई सोचता ही नहीं। तुम्हारी इच्छा नहीं हो फिर भी वह बदल सके ऐसा नहीं है। तुम्हारी इच्छा की बात नहीं है। जन्म हुआ तब से मन-वचन-काया की तीनों बेटरियाँ 'डिस्चार्ज' होती रहती हैं। क्योंकि पूर्वजन्म में 'चार्ज' किया है, इसलिए। 'डिस्चार्ज' होता है तब पता चलता है कि उल्टा 'चार्ज' किया था। इसलिए फिर सुल्टा 'चार्ज' करोगे तो फिर लाइफ़ (ज़िंदगी) अच्छी बीतेगी। बाकी, अभी तो पूरी फिल्म उतर गई है। अब तो किरदार अदा करो। जो फिल्म पर्दे पर अभी दिखाई दे रही है उसका शूटिंग तो पहले कब का हो चूका है, लेकिन अक्करमी अभी पर्दे पर फिल्म देखता है और पसंद नहीं आए तब कहता है कि फिल्म कट करो, कट करो। अरे मुआ, अब कैसे कट कर सकते हैं? वो तो जब शूटिंग कर रहे थे, 'चार्ज' कर रहे थे, तब सोचना था न? अब तो कोई कुछ बदल नहीं सकता। इसलिए राग-द्वेष किए बिना चुपचाप फिल्म पूरी कर लो।

अच्छा लगता हो उस पर राग और अच्छा नहीं लगता हो उस पर द्वेष! अर्थात् राग-द्वेष और 'मैं चंदूभाई हूँ' यह अज्ञान, इनसे जगत् चल रहा है। जैन राग-द्वेष और अज्ञान कहते हैं और वेदांती मल, विक्षेप और अज्ञान कहते हैं।

पूरा जगत् 'चार्ज' के ही वश हो गया है।

'चार्ज' वह भगवान की आज्ञा के विरुद्ध है। 'डिस्चार्ज' वह भगवान की आज्ञा के विरुद्ध नहीं है।

'कर्तापद' का भान है तब तक 'चार्ज' होता ही रहता है। अक्रम मार्ग में आपका कर्तापद 'हम' उड़ा देते हैं। 'मैं करता हूँ', वह भान उड़ जाता है और 'कौन' करता है वह समझ दे देते हैं। इसलिए 'चार्ज' होना बंद हो जाता है। फिर क्या रहा? सिर्फ 'डिस्चार्ज' स्वरूप!

प्रश्नकर्ता : यह भाव 'डिस्चार्ज' है और यह भाव 'चार्ज' है, ऐसा फ़र्क़ हमें अंदर कैसे पता चलता है?

दादाश्री : 'मैं चंदूभाई हूँ' आपकी श्रद्धा में ऐसा हो, तब तक 'चार्ज' भाव होते हैं। लेकिन आप 'शुद्धात्मा हो', तो 'चार्ज' भाव बंद हो गया, नये कर्म बंधने से रुक गए।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने जो कहा कि ज्ञान के बाद भावना नहीं करनी है और कॉज़ेज उत्पन्न होनेवाले नहीं हैं, तो फिर पुरुषार्थ कहाँ आया?

दादाश्री : पुरुषार्थ तो, हमें अपने स्वरूप का पुरुषार्थ करना है। पुरुष हुए इसलिए पुरुषार्थ करना है। अर्थात् ज्ञाता-दृष्टा, वह पुरुषार्थ। इस पुरुषार्थ को स्वभाव कहा जाता है। उसका स्वभाव ही ज्ञाता-दृष्टा का है। करने को कुछ भी नहीं रहता, स्वभाव ही है। लेकिन व्यवहार में यह शब्द बोलना पड़ता है, पुरुषार्थ! बाकी, उसका स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा का है।

आत्मा का अन्य कोई पुरुषार्थ है नहीं। ज्ञाता-दृष्टा ही उसका पुरुषार्थ है और परमानंद उसका परिणाम है।

लौकिक पुरुषार्थ-अलौकिक पुरुषार्थ

पुरुषार्थ किसे कहते हैं? स्वतंत्रपन होता है, स्वाधीन होता है, पराधीन नहीं होता। और दूसरे संयोग इकट्ठे हों तब कार्य होता है, 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' के आधार पर होता है, वह प्रारब्ध है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आप बताइए कि आत्मा स्वाधीन है या पराधीन?

दादाश्री : स्वाधीन भी है और पराधीन भी है। अज्ञान के आधार पर पराधीन है और ज्ञान के आधार पर स्वाधीन अर्थात् पुरुष है। पुरुषार्थ सहित है। तब तक, पुरुषार्थ कह ही नहीं सकते, किसी भी प्रकार का पुरुषार्थ नहीं है। वह भ्रांत पुरुषार्थ है और वो भी एविडेन्स के आधार पर, नैमित्तिक के आधार पर है। मतलब, ज्ञान प्राप्ति होने के बाद जो पुरुषार्थ होता है वह पुरुष होने के बाद का पुरुषार्थ है। फिर आत्मा स्वाधीन है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्त हो जाए फिर आत्मा स्वाधीन हो जाता है, फिर आत्मा को कुछ भी करने का नहीं रहता। यदि अज्ञान है तो आत्मा पराधीन है, इसलिए हमें कुछ करने को नहीं रहता। अर्थात् कोई भी संयोग में चाहे ज्ञान हो या नहीं हो, आत्मा को कुछ भी करना रहता ही नहीं?

दादाश्री : आत्मा, ज्ञान होने के बाद ही पुरुषार्थ करता है।

प्रश्नकर्ता : बिना पुरुषार्थ के ज्ञान नहीं होता और आप कहते हो कि ज्ञान होने के बाद पुरुषार्थ होता है, यह किस तरह?

दादाश्री : बिना पुरुषार्थ के ज्ञान नहीं होता, ज्ञान के बाद पुरुषार्थ होता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर पहले उसे पुरुषार्थ की ज़रूरत नहीं है?

दादाश्री : पुरुषार्थ होता ही नहीं न! जो जीव निरंतर परसत्ता में हैं उन बेचारों को कैसा पुरुषार्थ?

अगर कहना हो तो भ्रांत पुरुषार्थ कह सकते हैं। जैसे कि, ये किस आधार पर आगे बढ़ते हैं? तब कहे, उनका नैमित्तिक पुरुषार्थ है, भ्रांत पुरुषार्थ है।

प्रश्नकर्ता : अज्ञानता में जिसे पुरुषार्थ मानता है वह नैमित्तिक पुरुषार्थ है।

दादाश्री : वो भी पुरुषार्थ नहीं है, भान ही नहीं है। ज्ञान में शायद ही कोई व्यक्ति समझ पाता है कि इसे पुरुषार्थ कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर किस बलबूते पर आत्मा को ज्ञान होता है? यदि अज्ञान दशा में पुरुषार्थ नहीं है तो किस बलबूते पर आत्मा को ज्ञान होता है? अज्ञान में से ज्ञान में आता है?

दादाश्री : पुण्य के बल पर।

प्रश्नकर्ता : मैं ये पूछना चाहता हूँ कि इसका मतलब यह हुआ कि महावीर स्वामी या बुद्ध भगवान, उन सभी ने पहले पुरुषार्थ किया ही नहीं है? ज्ञान प्राप्त होने के बाद ही पुरुषार्थ किया है?

दादाश्री : पुरुषार्थ ज्ञान होने के बाद ही होता है, पहले नहीं होता। भ्रांति ही होती है। पहले पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ। प्रकृति और पुरुष दोनों अलग हो जाते हैं। ज्ञान प्राप्त हो, फिर पुरुषार्थ शुरू होता है और तब तक प्रकृति और पुरुषार्थ पुरुष दोनों एकाकार हैं। तन्मयाकार हैं, वहीं से भ्रांति है।

इसे इगोइज़्म कहा है। लौकिक पुरुषार्थ कहा है। लोग पुरुषार्थ कहें तो आप खुश हो जाते हो। लेकिन मुझ जैसा व्यक्ति इसे लौकिक कहे इसलिए आपको चुभता है। लौकिक यानी लोगों ने माना हुआ पुरुषार्थ, सिर्फ इगोइज़्म है।

प्रश्नकर्ता : इसमें कुछ क्षयोपशम का भाव आता है या नहीं?

दादाश्री : कुछ भी नहीं आता। सब साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स। एक तो आपका पुण्य ज़बरदस्त और दूसरे सारे संयोग इकट्ठे होते हैं, जैसे कि टाइम का मिलना, फलाँ का मिलना, मित्र का मिलना, वगैरह, इस प्रकार संयोग इकट्ठे होकर आप यहाँ आ सकें। फिर रास्ते में आते-आते आपको गाड़ी मिल जाती है। संयोग इकट्ठे हुए थे न? मिली होगी, मोटर मिली होगी, कुछ मिला था?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : और वह आमने-सामने टकराई नहीं, ऐसा भी होता है न?

प्रश्नकर्ता : ये भी सही है।

दादाश्री : यहाँ आते समय, कोई अकस्मात नहीं हुआ, तभी आप आ सकें न?

प्रश्नकर्ता : ये भी उदयिक भाव है?

दादाश्री : उदय। उदय के अलावा और क्या है? यह आपका उदय, पुण्य का उदय है, बड़ा महान पुण्य का उदय है। इसलिए आपको यहाँ पर ज्ञानीपुरुष के दर्शन हुए।

मेरी बात को समझो, सारी बातें संपूर्ण रूप से समझ लो। अगर इसे मैं पुरुषार्थ कहूँगा, तो सिर्फ पुरुषार्थ नहीं बोलूँगा। मैं लौकिक पुरुषार्थ कहूँगा।

प्रश्नकर्ता : अलौकिक पुरुषार्थ कौन-सा कहा जाता है?

दादाश्री : अलौकिक पुरुषार्थ, पुरुष होने के बाद होता है, जिस में इगोइज़्म नहीं होता। और अलौकिक पुरुषार्थ में इस तरह का पुरुषार्थ होता ही नहीं। आप जो करते हो न, ऐसा पुरुषार्थ अलौकिक पुरुषार्थ में नहीं होता कि, 'मैं संडास जाकर आया, मैंने खाया, मैंने पिया, मैं सत्संग करने गया, स्वाध्याय करने गया', ऐसा सब अलौकिक पुरुषार्थ में नहीं होता। आप जिसे पुरुषार्थ कहते

हो, ऐसा कोई भी पुरुषार्थ नहीं होता। अलौकिक पुरुषार्थ में ऐसा नहीं होता, क्योंकि वह पुरुषार्थ नहीं है। इसका क्या कारण है? कि परसत्ता कर रही है और आप समझते हो कि 'मैं करता हूँ', इतना ही है। लोग इस बात को नहीं समझेंगे। परसत्ता यानी परसत्ता! आपकी समझ में ऐसा आता है कि परसत्ता कर रही है? आपकी जो सत्ता नहीं है उसे आप अपनी सत्ता मानकर बोलते हो, इसे इगोइज़्म कहते हैं।

फ़रजियात (अनिवार्य) में 'इगोइज़्म' नहीं करे, उसे पुरुषार्थ कहते हैं। सच्चा पुरुषार्थ कब उत्पन्न होता है? 'ज्ञानीपुरुष' पुरुष बनाएँ, उसके बाद पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। तब तक तो प्रकृति के आधार पर चल रहा है।

प्रकृति ज़बरदस्ती नचा रही है उसमें आप कहते हो कि, 'मैं करता हूँ', इसे भ्रांति का पुरुषार्थ कहते हैं। ये सच्चा पुरुषार्थ नहीं है। पुरुष और प्रकृति दोनों अलग हो जाएँ उसके बाद ही सच्चा पुरुषार्थ होता है।

निरंतर सीधा भाव वही सच्चा पुरुषार्थ

पुरुषार्थ तो, पुरुष हुआ, जागृत हुआ यानी खुद की भूलें दिखने लगीं, निष्पक्षपात रूप से दिखने लगीं। चंदूभाई का हर एक दोष समझ में आने लगे तब निष्पक्षपातपन उत्पन्न हुआ। हुए। तब जजमेन्ट पावर (निर्णय शक्ति) आता है, उसके बाद सच्चा पुरुषार्थ शुरू होता है।

अपने वाणी, वर्तन और विनय में बदलाव आता है या नहीं, उसे भी हमें स्टडी करते रहना चाहिए। वाणी थोड़ी बदलती जा रही है या नहीं? दादा जैसा होना ही पड़ेगा न? तभी मोक्ष में जा सकेंगे। मोक्ष में तो एक ही प्रकार की क्वॉलिटी! पूरे सौ-प्रतिशत चाहिए न? उसमें क्या दस प्रतिशत चलेंगे? मतलब यह पूरा मार्ग शुद्धिकरण का मार्ग है।

मोक्ष में जाने की भावना हो, कुछ भी प्राप्त करने की भावना हो न तो उसमें तन्मयाकार वृत्ति रहती है, मतलब उस ओर की तीव्रता होनी चाहिए। तीव्रता यानी खुद का ज़बरदस्त पुरुषार्थ होना चाहिए।

ज्ञान-अज्ञान का भेदन करे वह रियल पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : ज्ञान और अज्ञान का भेद करे, वही पुरुषार्थ?

दादाश्री : वही पुरुषार्थ। आप शुद्धात्मा रहो, शुक्लध्यान में रहो, वह पुरुषार्थ। आप शुद्धात्मा हो, अब कोई आपका अपमान करता हो तब तो आपको ऐसा लगता है कि 'यह ऐसा कर रहा है।' 'यह कर रहा है' ऐसा मानते हो, वो आपकी समझ में भूल है। वह भी शुद्धात्मा है और वह करता है वो सबकुछ तो उदयकर्म के अधीन करता है, वह खुद नहीं करता। वह बेचारा उदयकर्म के अधीन है। लट्टू घूमता है और अपने-अपने उदयकर्म आमने-सामने व्यवहार निपटा देते हैं। हमें देखते रहना है कि ये दोनों पुद्गल आपस में क्या कर रहे हैं। उसे देखना, वह पुरुषार्थ है।

जय सच्चिदानंद

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

चिकनी फाइलों से निपटारा

बहुत से लोग मुझे कहते हैं कि, 'दादाजी, समभाव से निपटारा करने जाता हूँ मगर होता नहीं है!' तब मैं कहता हूँ, अरे भैया, निपटारा करने का नहीं है! तुझे समभाव से निपटारा करने का भाव ही रखने का है। समभाव से निपटारा हो या नहीं हो। तेरे अधीन नहीं है। तू मेरी आज्ञा में रहा कर न! उससे तेरा बहुतेरा काम पूरा हो जाएगा और पूरा न हुआ तो वह 'नेचर' के अधीन है।

सामनेवाले के दोष दिखाई पड़ना बंद हो तो संसार छूटेगा। हमें गालियाँ सुनाएँ, नुकसान करें, पीटें तब भी दोष दिखाई नहीं पड़े तब संसार छूटेगा। वरना संसार छूटेगा नहीं।

अब सभी लोगों के दोष दिखाई पड़ना बंद हो गए?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी। कोई बार दोष नज़र आने पर प्रतिक्रमण कर लेता हूँ।

दादाश्री : रास्ता यह है कि 'दादाजी की आज्ञा में रहना है', ऐसा निश्चय करके दूसरे दिन से शुरूआत कर दें। और जितना आज्ञा में रहा नहीं जाए उनके प्रतिक्रमण करते रहे। और घर के सारे सदस्यों को संतोष दे, समभाव से निपटारा करके। फिर भी घर के सभी उछलकूद करें तो हम देखा करें। हमारा पिछला हिसाब है इसलिए उछलकूद करेंगे। यह तो आज ही तय किया। अर्थात् घर के सभी को प्रेम से जीतें। वह तो फिर खुद को भी पता चलेगा कि अब सब ठिकाने लग रहा है। फिर भी घर के लोग अभिप्राय दें तभी तो मानने योग्य कहलाए। आखिर तो उसके पक्ष में ही होंगे, घर के लोग।'

प्रश्नकर्ता : हम जो प्रतिक्रमण करते हैं उस प्रतिक्रमण का परिणाम इस मूल सिद्धांत पर है कि, 'हम सामनेवाले के शुद्धात्मा को देखते हैं तो उसके प्रति जो भाव है, बुरा भाव है, वे कम होंगे न?'

दादाश्री : हमारे बुरे भाव टूट जाएँ। हमारे खुद के लिए ही है यह सब। सामनेवाले को लेना-देना नहीं है। सामनेवाले में शुद्धात्मा देखने का इतना ही हेतु है कि हम शुद्ध दशा में, जागृत दशा में हैं।

प्रश्नकर्ता : तो उसको हमारे प्रति जो बुरा भाव होगा वह कम होगा न?

दादाश्री : नहीं, कम नहीं होगा। आप प्रतिक्रमण करें तो होगा। शुद्धात्मा देखने से नहीं होता, पर प्रतिक्रमण करें तो कम होगा।

प्रश्नकर्ता : हम प्रतिक्रमण करें तो उस आत्मा को असर होगा कि नहीं?

दादाश्री : असर होगा। शुद्धात्मा देखने पर भी फायदा होगा लेकिन तुरंत फायदा नहीं होगा। बाद में आहिस्ता, आहिस्ता, आहिस्ता! क्योंकि शुद्धात्मा रूप से किसी ने देखा ही नहीं है। अच्छा आदमी और बुरा आदमी इस दृष्टि से देखा है। बाकी शुद्धात्मा दृष्टि से किसी ने देखा नहीं है।

यह ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् नए पर्याय अशुद्ध नहीं होते, पुराने पर्यायों को शुद्ध करने है और समता रखनी है। समता माने वीतरागता। नए पर्याय बिगड़ते नहीं, नए पर्याय शुद्ध ही रहेंगे। पुराने पर्याय अशुद्ध हुए हो, उसका शुद्धिकरण करें। हमारी आज्ञा में रहने से उसका शुद्धिकरण होगा और आपको समता में रहना होगा।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१७ से २२ जुलाई : ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में तीन दिनों के लिए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रति वर्ष ओस्ट्रोलिया के सेन्टरों में अधिक से अधिक परिवार दादा सत्संग परिवार में जुड़ते जा रहे हैं। यहाँ के सत्संग सेन्टरों में हाज़िरी बढ़ती जा रही है। प्रथम दिन ही आप्तपुत्र सत्संग दौरान हॉल पूरा भर गया। २१५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ऑस्ट्रेलिया में अंतिम दो वर्षों के दौरान ज्ञान लिए हुए बहुत से महात्मा दादा के ज्ञान में मज़बूत होते जा रहे हैं।

२० से २२ जुलाई दौरान तीन दिनों की विशेष सत्संग शिविर में सिड़नी, पर्थ, ब्रिस्बन, एडेलेइड जैसे ऑस्ट्रेलिया के शहर और न्यूझीलेन्ड के कुल मिलाकर लगभग २०० जितने महात्माओं ने हिस्सा लिया । अच्छे वातवरण और बहुत ही कम प्रदूषण के कारण पूज्यश्री ने काफी समय महात्माओं के साथ हॉल के बाहर खुले वातावरण में बिताया। महात्माओं को पूज्यश्री के नज़दिकी सानिध्य का आनंद उठाने का अमूल्य अवसर मिला।

२३ से २५ जुलाई : ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न शहर में तीन दिनों के लिए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूज्यश्री प्रथम बार इस शहर में पधारें। स्थानिक महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इनफोर्मल समय बिताया। पूज्यश्री ने मेलबर्न शहर में स्थित बहुत पुरानी चर्च की मुलाकात लेकर तमाम क्रिश्चियन आत्मज्ञान को प्राप्त करें, इसलिए प्रार्थना की। पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ क्रूझ में सवारी की और क्रूझ की कप्तानी भी की । नये ५५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया था।

२७ से २९ जुलाई : ऑस्ट्रेलिया के पर्थ शहर में दूसरी बार पूज्यश्री के सान्निध्य में तीन दिनों के लिए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित किया गया। पर्थ के महात्माओं ने बगीचे में पूज्यश्री के साथ इनफार्मल सत्संग और दर्शन का आनंद उठाया। नए ८५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

३१ जुलाई : दो महीनें के बाद सत्संग प्रवास बाद पूज्यश्री के सीमंधर सिटी आगमन के समय सीमंधर सिटी गेट नं -१ से वात्सल्य तक, रोड पर दोनों तरफ महात्माओं ने खड़े रहकर अभिवादन के साथ अति उल्लास से पूज्यश्री का स्वागत किया।

२ अगस्त : अडालज त्रिमंदिर में सुबह महात्माओं की खचाखच हाज़िरी के साथ पूज्यश्री ने सभी भगवंतों का पूजन करके राखी बाँधी। पूज्यश्री ने रक्षाबंधन निमित्त पर महात्माओं को संदेश दिया। उसके बाद लगभग तीन घंटे तक चले हुए दर्शन कार्यक्रम दौरान पाँच हज़ार से अधिक महात्माओं ने दर्शन किए।

३ से ९ अगस्त : अडालज त्रिमंदिर में जन्माष्टमी का त्योहार भव्य रूप से मनाया गया। हज़ारों दर्शनार्थी दर्शन के लिए उमड़ पड़े। 'चिंता' विषय पर विशेष रूप से तैयार किया गया वीडियो शो और 'दु:ख देने के परिणाम' पर पपेट शो हज़ारों श्रद्धालुओं ने देखें। रात के ९ से १२ दौरान विशेष भक्ति कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें भगवान श्री कृष्ण के भक्तिपद गाएँ गए । पूज्यश्रीने रात को १२ बजे मटकी फोड़कर श्री कृष्ण जन्म मनाया। भगवान श्री कृष्ण, श्रीनाथजी, तीरुपति बालाजी, परम पूज्य दादा भगवान और पूज्य नीरू माँ का पूजन किया और प्रसाद अर्पण किया। अंत में हर्षोल्लास के साथ भगवाम श्री कृष्ण की आरती की गई। समग्र मंदिर सभा मंडप, पोडीयम और जायजेन्टिक हॉल महात्मा-मुमुक्षुओं की हाज़िरी से खचाखच भर गएँ। भुज, राजकोट और गोधरा त्रिमंदिर में भी जन्माष्टमी पर्व उल्लासपूर्वक महात्माओं की हाज़िरी में मनाया गया।

११ से १३ अगस्त : अडालज त्रिमंदिर में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सत्संग दौरान समग्र हॉल भर गया, जिस तरह पर्युषण पारायण के समय महात्माओं की हाज़िरी होती है, उसी तरह। १९०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सोमवार के सुबह के सत्संग में नए ज्ञान प्राप्त किए हुए महात्माओं ने प्रश्न पूछकर समाधान प्राप्त किया।

१७ से १९ अगस्त : पिछले वर्ष के बाद हैदराबाद में इस वर्ष भी दूसरी बार सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। दो दिन के सत्संग दौरान मुमुक्षु महात्माओं के प्रश्नों के उत्तर देते हुए पूज्यश्री ने दादा का विज्ञान सरल भाषा में समझाया। स्थानिक महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ हुसैनसागर लेक में बुद्ध भगवान की विराट प्रतिमा के पास सत्संग किया और गरबा किया। २५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

अमरावती **दिनांक :** 21 सितम्बर, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9422915064
स्थल : दोशी वाडी, अलंकार सिनेमा के सामने, जयस्तंभ चौक के पास, अमरावती.

अकोला **दिनांक :** 22 सितम्बर, **समय:** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9422403002
स्थल : अमृत वाडी, नानाभाई प्लोट, ओपन एयर थीयेटर के सामने, गांधी रोड, अकोला.

जलगाँव **दिनांक :** 23 सितम्बर, **समय:** सुबह 10 से 12 (गुजराती में सत्संग) **संपर्क :** 9420942944
समय: शाम 4-30 से 7 (हिन्दी में सत्संग)
स्थल : रोटरी होल, गणपती नगर, जलगाँव.

भीलवाड़ा **दिनांक :** 23 सितम्बर, **समय:** सुबह 9-30 से 12 **संपर्क :** 9694703632
स्थल : होटल फ्लोरा पार्क, दादीधाम के सामने, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा.

कोटा **दिनांक :** 24 सितम्बर, **समय:** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9829262735
स्थल : गुजराती समाज भवन, गुमानपुरा, कोटा.

जालना **दिनांक :** 24 सितम्बर, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9403027474
स्थल : गुरु गणेश सभागृह, शिवाजी की प्रतिमा के पास, जालना.

टोंक **दिनांक :** 25 सितम्बर, **समय:** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9314788352
स्थल : पुरानी RTO ओफिस, नये सदर थाने के सामने, ईन्डस्ट्रीयल एरीया, जयपुर रोड, टोंक.

जिन्तुर **दिनांक :** 25 सितम्बर, **समय:** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 7588161826
स्थल : प्रेमचंद एम. अच्छा, मार्केट यार्ड (मोंढा), परभणी, जिन्तुर.

अहमदनगर **दिनांक :** 26 सितम्बर, **समय:** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9422726670
स्थल : रावसाहब पटवर्धन स्मारक, प्रोफेसर कोलोनी के पास, श्री स्मर्थ विद्यामंदिर के सामने, सावेदी, अहमदनगर.

पूणे **दिनांक :** 27 सितम्बर, **समय:** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9860797920
स्थल : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, मार्केट यार्ड, पूणे.

नासिक **दिनांक :** 28 सितम्बर, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9420694848
स्थल : पाटीदार वाडी, पंचवटी कोलेज के पीछे, कन्नोवर ब्रीज के पास, पंचवटी, नासिक.

औरंगाबाद **दिनांक :** 30 सितम्बर, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : पाटीदार भवन, रोकडीया हनुमान कोलोनी के सामने, अमरप्रीत होटेल के पास, जालना रोड, औरंगाबाद.

रांची **दिनांक :** 24 तथा 25 अक्तुबर, **समय:** शाम 4-30 से 5-30 **संपर्क :** 9334055311
स्थल : गुजराती स्कूल, मद्रास कोफी हाउस के सामने, लालजी-हीरजी रोड, रांची.

कोलकाता **दिनांक :** 27 अक्तुबर, **समय:** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9830006376
स्थल : वृंदावन हॉल, 29A/1B, रामकृष्ण समाधि रोड, कानकुरगंची, कोलकाता.

कोलकाता **दिनांक :** 28 अक्तुबर, **समय:** सुबह 9-30 से 12 **संपर्क :** 9330333885
स्थल : सेन्ट्रल पोईन्ट स्कूल (टोप फ्लोर), 62, बी.बी. गांगुली स्ट्रीट, बोवबाजार, कोलकाता.

कोलकाता **दिनांक :** 28 अक्तुबर, **समय:** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9330333885
स्थल : 129A, टोप फ्लोर, रसबिहारी एवन्यु, एस.पी. मुखर्जी रोड, कोलकाता.

पारादीप **दिनांक :** 30 अक्तुबर, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9090276204
स्थल : मल्टीपर्पस होल, पी.पी.एल. टाउनशीप, पारादीप, उड़ीसा.

भुवनेश्वर **दिनांक :** 31 अक्तुबर, **समय:** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9090276204
स्थल : कलींगा कन्वेन्शन हॉल, पंथा निवास, लेवीस रोड, बी.जे.बी कोलेज के पास.

बिलासपुर **दिनांक :** 1 नवम्बर, **समय:** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9425530470
स्थल : जैन भवन, गुजराती समाज के सामने, तीकरापरा.

Pujya Deepakbhai's East Africa & Dubai 2012 Satsang Schedule

DATE	DAY	VENUE	PROGRAM	FROM	TO	VENUE	CONTACT
24-Oct	Wed	Kenya	Aptaputra Satsang	8.00 PM	10.00 PM	BROOK HOUSE SCHOOL Magadi Road, Langata, Near Nairobi National Park, Nairobi, Kenya.	+254 (0)733 612 040
25-Oct	Thu	Kenya	Satsang	8.00 PM	10.00 PM		+254 (0)733 872 387
26-Oct	Fri	Kenya	Brookhouse Shibir	9.30 AM	6.00 PM		
27-Oct	Sat	Kenya	Brookhouse Shibir	9.30 AM	6.00 PM		
27-Oct	Sat	Kenya	**GNAN VIDHI**	4.00 PM	8.00 PM		
28-Oct	Sun	Kenya	Brookhouse Shibir	9.30 AM	6.00 PM		
30-Oct	Tue	Kenya	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.00 PM	SSHU HALL Lakshmi Narayan Temple, Ogada Street, Kisumu, Kenya.	+254 (0)774 154 100
31-Oct	Wed	Kenya	Satsang	7.00 PM	9.00 PM		
1-Nov	Thu	Kenya	**GNAN VIDHI**	5.00 PM	9.00 PM		
2-Nov	Fri	Uganda	Aptaputra Satsang	8.30 PM	10.30 PM	SPEKE RESORT, Munyonyo, Kampala, Uganda.	+256 (0)712 992 272
3-Nov	Sat	Uganda	Satsang	8.30 PM	10.30 PM		
4-Nov	Sun	Uganda	**GNAN VIDHI**	3.30 PM	7.00 PM		
7-Nov	Wed	Dubai	Satsang	7.00 PM	10.00 PM	DHOW PALACE HOTEL, Behind Standard Chartered Bank, Kuwait Street, Bur Dubai, Dubai, UAE.	+971 (0)557 316 937
8-Nov	Thu	Dubai	**GNAN VIDHI**	5.00 PM	10.00 PM		+971 (0)501 364 530
9-Nov	Fri	Dubai	Mahatma Only Shibir (UAE)	9.30 AM	6.00 PM	**TBA**	
10-Nov	Sat	Dubai		9.30 AM	6.00 PM		
11-Nov	Sun	Dubai		9.30 AM	6.00 PM		

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'सोहम'** पर हर रोज़ दोपहर १-३० से २, शाम ६-३० से ७ (रिपीट) (हिन्दी में)

✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में)

✦ **'डीडी-सप्तगिरि'** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (तेलुगु में)

USA ✦ **'TV Asia'** पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

Europe ✦ **'वीनस'** (स्काय प्लेटफार्म-चेनल 805) पर हर रोज़ रात १० से ११ (हिन्दी में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत और यु.एस.ए. के अलावा) **सोनी टीवी** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'दूरदर्शन'** पर हर **सोम-मंगल-बुध सुबह ८-३०** से **९** (हिन्दी में)-**(समय-दिन में परिवर्तन नोट करें)**

✦ **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)

✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

✦ **'डीडी-सह्याद्रि'** पर सुबह ७-३० से ८ सोम से शनि (मराठी में)

✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **'SAHARA ONE'** पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

दि. **२२ सितम्बर** (शनि), शाम ४-३० से ७-**सत्संग** तथा **२३ सितम्बर** (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**

दि. **१३ नवम्बर** (मंगल), रात ८ से १० - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

दि. **१४ नवम्बर** (बुध), सुबह ८-३० से १, शाम ४-३० से ६-३० - **नूतन वर्ष (वि.सं.)**

जयपुर

दि. **९ अक्तूबर** (मंगल), - शाम ६ से ८-३० - **सत्संग** तथाा **१० अक्तूबर** (बुध), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : उत्सव होल, पी-10, सेक्टर-2, विद्याधरनगर, जयपुर (राजस्थान). **संपर्क :** 9461905465

दिल्ली

दि. **१२-१३ अक्तूबर** (शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३० - **सत्संग** तथा **१४ अक्तूबर** (रवि), शाम ४-३० से ८ - **ज्ञानविधि**

स्थल : लौरेल हाई-स्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा. **संपर्क :** 9811488263

भावनगर में परम पूज्य दादा भगवान का १०५वाँ जन्मजयंती महोत्सव

दि. **२३ नवम्बर** (शुक्र), शाम ७-३० से १० - **सत्संग**

दि. **२४ नवम्बर** (शनि), सुबह ९-३० से १२, शाम ७-३० से १० - **सत्संग**

दि. **२५ नवम्बर** (रवि), सुबह ९-३० से १२ - **सत्संग** तथा शाम ४ से ७-३० - **ज्ञानविधि**

दि. **२६ नवम्बर** (सोम), सुबह ९-३० से १२, शाम ७-३० से १० - **सत्संग**

दि. **२७ नवम्बर** (मंगल), सुबह ८ से १, शाम ४-३० से ६ - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

स्थल : जवाहर मैदान, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मोल के सामने, **भावनगर** (गुजरात).

सूचना : यदि आप इस महोत्सव में भाग लेना चाहते हैं तो कृपया अपना **रजिस्ट्रेशन दि. ४ नवम्बर २०१२ तक** अपने नज़दिकी सत्संग सेन्टर पर अवश्य करवाएँ। जिनके नज़दीक में सेन्टर नहीं है, वे फोन **079-39830400** पर रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

कोलकाता

दि. **३० नवम्बर-१ दिस.** (शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३०-**सत्संग** तथा **२ दिस.** (रवि), शाम ५ से ८-३०-**ज्ञानविधि**

स्थल : विद्या मंदिर, १, मोईरा स्ट्रीट, मिन्टो पार्क के पास, कोलकाता. **संपर्क :** 033-32933885

रायपुर

दि. **४ दिसम्बर** (मंगल), शाम ६ से ८-३० - **सत्संग** तथा **५ दिसम्बर** (बुध), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : शहीद स्मारक भवन, रजबंधा मैदान, रायपुर (छत्तीसगढ़). **संपर्क :** 9329644433

मुंबई

दि. **७-८ दिसम्बर** (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९ - **सत्संग** तथा **९ दिसम्बर** (रवि), शाम ५-३० से ९ -**ज्ञानविधि**

स्थल : श्री दत्त क्रीडा प्रबोधिनी, डी-मार्ट के सामने, फोर्टिस होस्पिटल के पास, मुलुंड (वेस्ट). **संपर्क :** 9323528901

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, **अहमदाबाद (दादा दर्शन):** (079) 27540408,
वडोदरा (दादा मंदिर): (0265)2414142, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123,
गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885
यु.के.: +44-7956476253, **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1-877-505-DADA(3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

सितम्बर २०१२
वर्ष - ७, अंक - ११
अखंड क्रमांक - ८३

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

भेदरेखा, रियल - रिलेटिव पुरुषार्थ की

संजोग इकट्ठे हो और उससे जो कार्य होता है वह सारा प्रारब्ध कहलाता है और संजोग इकट्ठे हो,उससे जो कार्य होता है, उसमें जो ध्यान उत्पन्न होता है वह पुरुषार्थ है । पुरुषार्थ दो प्रकार के है : भ्रांतिवाले को भ्रांत पुरुषार्थ और 'ज्ञानी' को ज्ञान (यथार्थ) पुरुषार्थ। 'चंदुभाई' (फाईल नं.1) क्या कर रहे है उसे 'आप' देखते रहो, उसी का नाम (यथार्थ) 'पुरुषार्थ'। जबकि भ्रांत पुरुषार्थ कौन-सा ? जो हो रहा है उसमें क्या भाव था और क्या भाव नहीं था वही भ्रांत पुरुषार्थ है । भ्रांत पुरुषार्थ में बीच में भाव आता है और यथार्थ पुरुषार्थ में ज्ञाता-दृष्टा। प्रारब्ध भुगतते ही भीतर पुरुषार्थ से (भ्रांत) बीज उद्‌भव होता है, क्योंक 'मैं कर्ता हूँ' भान है इसलिए। वर्ना प्रारब्ध भुगत ले और बाद में मुक्ति मिले।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.